हज का साथी

हज का साथी

HAJ GUIDE

✤ लेखक ✤

हज़रत मौलाना अब्दुल करीम पारेख साहब नागपुर-8

✤ प्रकाशक ✤

खुर्शीद बुक डिपो

2256, अहाता हज्जन बी, रोदग्रान,
लाल कुआं दिल्ली-110006

फ़ेहरिस्त मज़ामीन

नंबर	विषय	पेज नंबर

आलमे इस्लाम के मशहूर मुफ़क्किर हज़रत मौलाना सय्यद अबुल हसन अ़ली नदवी मद्दज़िल्लहुल आ़ली का इरशादे गिरामी

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

सब जानते हैं कि हज का सफ़र दीनी, शरअ़ी और फ़िक़ही हैसियत से भी, और इन्तेज़ामी, इल्मी मसाफ़त व तवालत, मक़ामात व हालात के इख़्तिलाफ़, हर हैसियत और नौअ़ियत से निहायत मोहतम बिश्शान, नाज़ुक और इम्तिहानी सफ़र है।

जिसके लिए बड़ी तैयारियों, जज़बा व शौक़, अ़ज़्म व हिम्मत, वाकंफियत और उन ख़ुश नसीब व होश मन्द लोगों के तजुर्बों और

मशवरों से फ़ायदा उठाने की भी ज़रूरत है, जो इस से पहले इस सफ़र की सआदत हासिल कर चुके हैं। इस मुबारक सफ़र के तक़ाज़ों और ज़रूरीयात से ज़रा सी ना वाक़फ़ियत और थोड़ी सी ग़फ़लत और ग़लती भी बहुत सी ग़ैर ज़रूरी दुशवारियों में मुब्तला और बहुत दिनों तक कफ़े अफ़सोस मलने और नदामत व हसरत पर मजबूर कर सकती है, और ऐसा हर साल बीसियों नहीं, सैकड़ों आदमियों को पेश आता रहता है।

इस बिना पर जहाँ हज के मसाइल व मनासिक पर बीसियों नहीं, बल्कि मुख़्तलिफ़ ज़बानों में सैकड़ों किताबें लिखी गयी हैं। हुज्जाज केराम को मशवरा देने के लिए मुख़्तलिफ़ इस्लामी ज़बानों में, ख़ास तौर से इस एशिया खण्ड में,

उर्दू में इतनी संख्या में सफ़र नामे और हाजियों की रहनुमाई के लिए छोटी बड़ी किताबें लिखी गयी हैं, जिनकी कोई हद व शुमार नहीं, लेकिन इन की मौजूदगी में भी नई किताबों की ज़रूरत बाक़ी रहेगी। ख़ास तौर पर दरमियानी दर्जे के हाजी व ज़ायरीन केराम के लिए एक ऐसे तजुर्बेकार इल्मी व इन्तेज़ामी ज़िन्दगी से मुनासबत रखनेवाले, रफ़ाक़त और सफ़र की दुशवारियों का तजुर्बा रखने वाले मुसलमानों के ख़ैर ख़्वाह (शुभ-चिंतक) और दीन के दाओ़ी के क़लम से एक मुख़्तसर किताब की ज़रूरत थी। जिसमें मज़मून निगारी, इल्मी मज़ामीन और अपने तास्सुरात व मुशाहदात के तफ़सीली बयान के बजाय, अपने तजुर्बों और दीन से वाक़फ़ियत की रौशनी में इल्मी हिदायत और मशवरे हों।

दाई-ए-दीन और मुबल्लिग़े क़ुरआन सदीक़े मोहतरम मौलाना अलहाज अब्दुल करीम पारेख साहब की छोटी सी किताब, जो सही मअ़ना में इस्म बा मुसम्मा है (हज का साथी) इसका पूरा नमूना है जो बहुत छोटे साइज़ के 144 सफ़हात पर मुश्तमिल (आधारित) है, और जिस में हज के ज़रूरी आदाब व मसाइल के साथ अ़मली तजुर्बा की बातें और मुख़लिसाना व मुबस्सिराना मशवरे भी आ गये हैं। मिसाल के तौर पर ख़रीदारी, निज़ामुल औक़ात, खाने का नज़्म, बहनों पर रहम कीजिए, चंद मालूमात, सामाने सफ़र, चौकन्ने रहिए, एक सवाल और उसका जवाब वग़ैरा वग़ैरा।

यह किताब, जो एहराम से पहले आसानी से जेब में आ सकती है और एहराम की हालत

में भी बे तकल्लुफ़ हाथ में रखी जा सकती है। सही मआ़ना में "हज का साथी" और बे तकल्लुफ़ एक मुअ़ल्लिमे हुज्जाज का काम कर सकती है।

उम्मीद है कि हज का इरादा करने वाले इस किताब से पूरा फ़ायदा उठायेंगे और यह किताब उन के लिए रहनुमा साबित होगी।

अबुल हसन अ़ली नदवी
7-शाबान हि: स. 1411
22-फ़रवरी इ. स. 1991

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नहमदुहू व नुसल्ली अ़ला रसूलिहिल-करीम.

हज एक ऐसा फ़रीज़ा है, जो हैसियत रखने वाले हर एक मुसलमान मर्द व औ़रत पर फ़र्ज़ है। इस फ़रीज़े को अदा करने के लिए अलहम्दु लिल्लाह बड़ी संख्या में मुसलमान हज्जे बैतुल्लाह के मुबारक सफ़र पर जाते हैं।

हज करना उम्र में सिर्फ़ एक बार ही फ़र्ज़ है, इस लिए क़ुदरती तौर पर बहुत से लोगों को हज की मालूमात उम्र में एक बार हासिल करनी पड़ती है। बहुत बारीक मसाइल को फ़र्ज़ वाजिब के साथ मिला कर बात कहने बताने से बहुत ज़्यादा मालूमात को दिमाग़ में थोड़े से वक़्त में बिठा लेना आम लोगों के लिए बड़ा मुश्किल हो जाता है और माहवारी के दिनों में बहनों के लिए और कम पढ़े लिखे लोगों के लिए मसाइल में

बहुत ज़्यादा तफ़सीलात घबराहट का सबब बनती है।

इसलिए इस आजिज़ ने यह मज़मून सिर्फ़ अल्लाह की रज़ा के लिए हुज्जाज केराम भाईयों और बहनों, दोनों की सहूलत के पेशे नज़र लिखा और इसका नाम "हज का साथी" (Haj Guide) रखा है। अल्लाह इसे क़ुबूल फ़रमाये।

"हज का साथी" पढ़ने वालों से गुज़ारिश है कि इस किताब को, हज से पहले दो एक मर्तबा सरसरी तौर पर देख लें, फिर निय्यत के बाद हज का सफ़र शुरू होते ही अपने सफ़र की, जिस मंज़िल में आप होंगे, "हज का साथी" में अपनी मंज़िल और मक़ाम पर आपको ज़रूरी हिदायात मिल जाएंगी।

मिसाल के तौर पर जब आप जद्दा एअर पोर्ट पर उतरेंगे तो 16 नंबर के उनवान

को पढ़ लें, फिर हवाई जहाज़ से उतरते ही आपको एक बड़े हॉल में ले जाया जायेगा, तो अब आप नं.16 की रहनुमाई हासिल कर सकेंगे और जब आप कस्टम में अपना सामान चेक करा रहे होंगे तो मज़मून नं.19 में आप को इस मौक़े की ज़रूरी मालूमात मिल जायेंगी।

जब आप एहराम बांध कर मिना रवाना हों, तो 40 नंबर देखें और मैदाने अ़रफ़ात में जाने के दिन आप को 42 नंबर पर निगाह डालनी चाहिए।

वैसे ही ज़ियारते मदीना के लिए जब आप रवाना होंगे, तो आप 58 नंबर के दायरे में अपने सफ़र में होंगे और जब "सलात व सलाम" पढ़ने की बारी आयेगी तो आप नं.69 का मज़मून देख लें। निय्यत से लेकर हज से वापसी तक चालीस दिन के औक़ात में आप को

तक़रीबन 100 मरहले पेश आयेंगे। इस मुख़्तसर किताबचे के ज़रिये हर मरहले. हर मोड़ पर मशवरे, मालूमात और हिदायात आप को सिलसिलावार मिलती जायेंगी।

ख़ादिम

अब्दुल करीम पारेख

नागपुर - 8

(इन्डिया)

रब्बि ज़िदनी इल्मा

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

(1) निय्यत :

पहला काम अल्लाह की रज़ा के लिए अपनी निय्यत को ख़ालिस कीजिए कि मैं अल्लाह के लिए उमरा और हज का सफ़र करने का इरादा करता हूँ। ऐ अल्लाह! तू मुझे कामयाब फ़रमा और मेरे लिए इस सफ़र की हर मंज़िल को आसान फ़रमा। क़ुरआन मजीद में अल्लाह तआ़ला का इरशाद है--

व अतिम्मुल हज्ज वल उ़म र त लिल्लाहि

तर्जुमा :- हज और उमरा सिर्फ़ अल्लाह के लिए पूरा करो.

(2) सफ़र का ख़र्च :

जब इस मुबारक सफ़र का इरादा हो

जाये तो सामाने सफ़र यानी ख़र्च का इन्तेज़ाम अपने साथ रखे ताकि इस फ़रीज़े की अदायगी में किसी से मांगना न पड़े।

(3) मशवरा :

हमारा मशवरा है कि मियाँ बीवी दोनों एक साथ हज का सफ़र करें तो ज़्यादा आसान और कम ख़र्च में यह सफ़र इन्शा अल्लाह बहुत ही सहूलत का होगा।

(4) सामान :

ज़रूरी सामान में कम से कम चीज़ें साथ लें। मिसाल के तौर पर बिस्तर हलका फुलका, एहराम की दो चादरें होती हैं। यह डबल जोड़ा साथ रखें, ताकि धोने की सहूलत हो। नीचे के लिए ढाई मीटर और ऊपर के लिए दो मीटर, प्लास्टिक की दो बालटियाँ, इसमें अपनी ज़रूरत का सब सामान भर लें। कमर में बांधने का एक चमड़े का पट्टा, जो बम्बई में

मिलता है। पेटी साथ लेनी हो तो टीन या लोहे की हरगिज़ न लें, ताकि आप को और दूसरे मुसाफ़िरों को ज़ख़्म या चोट लगने का डर न रहे।

याद रखें कि बग़ैर सिली चादरें पहन कर जब आप एहराम की हालत में होंगे तो जेब न होने के सबब दिक़्क़त व परेशानी न हो, इसलिए कपड़े के बने हुए बस्ते, कांधे पर लटकाने के लिए रख लें।

चमड़े या रेगज़ीन का बस्ता भी हो तो एहराम की हालत में पासपोर्ट और ज़रूरी काग़ज़ात और नोट वग़ैरा रखने में सहूलत होगी, साथ ही तमाम ज़रूरी काग़ज़ात की फ़ोटो कापियाँ ज़रूर बनवा लें। और यह सब साथ रखें।

(5) हज कमेटी :

हज के सफ़र में हज कमेटी के ज़रीये

हज बहुत आसान होता है, लेकिन अब दिल्ली और मद्रास वग़ैरा से भी हाजी साहेबान सफ़र करते हैं, इसमें भी सहूलत होती है।

लेकिन चन्द हज व ज़ियारत कराने वाली कंपनियाँ भी INTER NATIONAL PASSPORT इन्टर नेशनल पासपोर्ट (बैनुल अक़्वामी पास पोर्ट) के ज़रीये हज कराने ले जाती हैं, लेकिन तजुर्बे से यह मालूम हुआ कि इन के मुक़ाबले में हज कमेटी के ज़रीये ही सफ़र का इन्तेज़ाम सरकारी ज़ाब्ते सहूलत और आसानी वाला होता है।

भारत सरकार के 1959 के पार्लियामेंट एक्ट नं. 51 के तहत क़ानून के दायरे में Foreign Currency यानी "ज़रे मुबादला" आप को रियाल की शक्ल में जद्दा में मिलेगा, और दीगर सहूलतें भी दे रखी हैं। इस लिए हज

कमेटी के ज़रीये ही हज का सफ़र ज़्यादा मुनासिब है।

हज कमेटी वाले पूरे जहाज़ में हाजियों को लाने ले जाने का इन्तेज़ाम करते हैं। इस में हाजी लोगों को सफ़र की तकलीफ़ बहुत कम होती है।

(6) कागज़ी कारवाई :

जैसे ही हज कमेटी का ऐलान नामा शाये हो, आप इस के फ़ॉर्म मंगाकर भर कर भेज दें, और वहाँ से इजाज़त मिलने पर जिस तारीख़ का आप का जहाज़ हो, उसके चन्द दिन पहले बम्बई पहुँच जायें, यानी हज कमेटी के हुक्म के मुताबिक़ बम्बई हाज़िर हों। हज कमेटी हर हाजी की दरख़्वास्त के साथ एक पम्फ़लेट भी भेजती है यानी हिदायत नामा, जिसमें डाक्टरी सर्टीफ़िकेट और फ़ोटो कापियाँ, ड्राफ़्ट और दीगर

मतलूबा मालूमात अच्छी तरह लिखी होती हैं। इन्हें पढ़कर उसके मुताबिक़ काग़ज़ी कारवाई तैयार कर ली जाती है।

(7) फ़ोटो कापियाँ :

अपने अपने फ़ोटो की चन्द कापियाँ और भी अपने साथ रखें, ताकि वक़्ते ज़रूरत काम पड़े तो परेशान न होना पड़े।

(8) हाजियों के ख़ादिम :

बम्बई में अलहम्दु लिल्लाह एक तवील अर्सा हुआ, हज कमेटी के तआवुन में दूसरे अहले ख़ैर हज़रात हुज्जाज केराम की बहुत अच्छी ख़िदमत करते हैं।

बम्बई में ऐसे मुख़लिस कारकुन आप को मुसाफ़िर खाने या हज हाऊस में मिलते ही रहेंगे। उनसे राब्ता क़ायम करके मालूमात हासिल कर लें।

(9) उमरे का एहराम :

आप के जहाज़ का दिन तो आप को मालूम हो चुका । अब आप को एहराम बांधना है। ग़ुस्ल कीजिये और बा वुज़ू होकर एहराम पहन लें। एक तहबन्द यानी बग़ैर सिली लुंगी और एक चादर कांधों पर डाल लें। सर खुला हुआ और पैर में एक ऐसी चप्पल पहन लें जो आजकल की हवाई चप्पल की तरह हो।

आज आपको उमरे की निय्यत का एहराम बांधना है यानी तमत्तुअ़ के हज वाला सफर आप उमरे से शुरु कर रहे हैं, इसलिए आप को हज के तीनों क़िस्मों की मालूमात हम दे रहे हैं। आपको यह मशवरा भी देते हैं कि आप तमत्तुअ़ वाले हज का फ़ैसला करें। इस में सहूलत और आसानी है।

पहले उमरे की निय्यत से एहराम बांध लें, फिर उमरा कर के मक्का मुअ़ज़्ज़मा में

क़याम करें और हज के दिन आने पर मक्का मुकर्रमा में आप को हज का एहराम बांधना है।

अब हम आप को तीनों क़िस्मों की मुख़्तसर मालूमात दे रहे हैं।

(10) हज की तीनों क़िस्मों की मुख़्तसर पहचान :

1) हज्जे इफ़राद 2) हज्जे क़िरान
3) हज्जे तमत्तुअ़

पहली क़िस्म हज्जे इफ़राद :

जो हज अकेला यानी सिर्फ़ हज ही किया जावे, उमरा इसके साथ न हो, तो ऐसे हज को हज्जे इफ़राद कहते हैं।

हज की इस क़िस्म में हाजी हज से पहले उमरा नहीं करेगा, यानी एहराम बांध कर चलने से लेकर हज के पूरा होने तक ऐसे हाजी को मुसलसल एहराम की तमाम पाबन्दियों पर

अ़मल करना होगा। जो आम लोगों के लिए ज़रा मुश्किल काम है, और एक तवील मुद्दत तक हर हाजी के लिए इन पाबन्दियों को निभाना बड़ी मेहनत का काम है। अल्लाह तआ़ला के जो ख़ास बन्दे हैं, वे हज्जे इफ़राद का एहराम बांध लेने की हिम्मत कर लेते हैं।

(11) दूसरी क़िस्म ."हज्जे क़िरान" :

एक ही निय्यत के साथ मुसलसल जारी रखते हुए एक ही बार के एहराम को उमरा और हज दोनों के लिए इस्तेमाल कर लिया जाये। उमरा करने के बाद बीच में एहराम न खोला जाय, बल्कि इस एहराम को पाबन्दी के साथ हज पूरा होने तक मुसलसल जारी रखा जाए, ऐसे हज को "हज्जे क़िरान" कहते हैं।

इस में हाजी लोग उमरा और हज दोनों का एहराम एक साथ बांधने की निय्यत करते हैं,

और काबा शरीफ़ पहुँच कर पहले उमरा करते हैं और हज के दिन आने तक मुसलसल एहराम ही की हालत में रहते हैं, और इसी एहराम से वे हज के पहले दिन 8 ज़िलहिज्जा को मिना पहुँचते हैं, फिर हज के तमाम अरकान पूरे करने के बाद एहराम से बाहर आ सकते हैं।

इसमें समझने की बात यह है कि अगर काबा शरीफ़ पहुँच कर हज के दिन में 20, 30 दिन या इससे कम ज़्यादा की देर हो तो इस दौरान एहराम मैला हो जाने पर एहराम को धोने के लिए दूसरा एहराम बांधा जा सकता है, मगर एहराम की मुसलसल तमाम शर्तें हज पूरा करने तक क़िरान वाले हाजियों पर लाज़िम हैं।

हज का यह तरीक़ा भी आम लोगों के लिए निभाना कठिन है। अल्लाह के कुछ मुत्तक़ी और परहेज़गार बन्दे क़िरान की नियत वाला

हज आज भी करते हैं, मगर हम सहूलत पसन्द लोगों के लिए इस्लामी शरीअ़त ने हज की एक तीसरी क़िस्म जिसे तमत्तुअ़ का हज कहते हैं, इसकी इजाज़त दी है। और आम लोग भारी संख्या में इसी क़िस्म का हज अदा करते हैं, जिसका बयान हम आगे दे रहे हैं।

(12) तीसरी क़िस्म-"हज्जे तमत्तुअ़" :

तमत्तुअ़ का तरीक़ा यह है कि पहले एहराम तमत्तुअ़ वाले उमरे की निय्यत से बांधा जाए और मक्का मुअ़ज़्ज़मा पहुँच कर उमरे के तमाम आदाब पूरे करने के बाद ऐसा हाजी एहराम से बाहर आ जाता है, और अपने मुल्क में जैसे कपड़े पहनता है वैसे कपड़े पहन कर एहराम की पाबन्दियों से आज़ाद हो जाता है, और मक्का शरीफ़ में हज के दिन आने तक बग़ैर एहराम के क़याम करने की उसे शरई़ी इजाज़त मिल जाती है।

(13) सहूलत का फ़ायदा उठाना :

उमरे के एहराम की हालत से निकल कर हज के आने तक मक्का मुअ़ज़्ज़मा में क़याम का इस हाजी ने फ़ायदा उठाया, सहूलत हासिल की। इसी को तमत्तुअ़ कहते हैं।

ऐसा हाजी 8 ज़िलहिज्जा को हज की निय्यत का एहराम बांध कर हज के तमाम अरकान पूरे करता है। ऐसे हज में उमरा और हज, एक ही सफ़र में किया जा सकता है। इसलिए बाहर के मुल्कों से आने वाले हर हाजी को हज का सफ़र आसान पड़ता है, इसलिए हम मशवरा देते हैं कि भारत, पाकिस्तान, बंगला देश से हज के सफ़र को जाने वाले लोग तमत्तुअ़ के हज की निय्यत कर लें। और इस तरह करें कि पहले उमरा की निय्यत से एहराम बांधे, बैतुल्लाह की ज़ियारत का सफ़र शुरू करें,

और मक्का मुअ़ज़्ज़मा पहुँच कर उमरे के अहकाम पूरे करने के बाद मक्का शरीफ़ में सुकूनत का शरअ़ी परवाना हासिल कर लें, ताकि हज का दिन आने तक उन को एहराम की पाबन्दियों से आज़ादी की सहूलत हासिल हो।

चूँकि तमत्तुअ़ का हज करने वाला पहले उमरा कर लेता है और एहराम की पाबन्दियों से आज़ाद होकर मक्का मुकर्रमा में क़याम करने का फ़ायदा उठाता है। यानी एक तरह से वह मक्का वालों की तरह हो जाता है। दूसरा फ़ायदा उस हाजी को यह होता है कि ऐसे शख़्स को हज का एहराम मक्का मुअ़ज़्ज़मा से बांध लेने की इजाज़त है, उसे अब मक्का की सरहद से बाहर जाकर किसी मीक़ात से एहराम बांधने की ज़रूरत नहीं।

अब चूँकि तमत्तुअ़ करनेवाले हांजी ने

बहुत से फ़ायदे उठाये हैं, इसलिए उस पर लाज़िम है कि एक क़ुर्बानी हज के दिनों में करे। अगर क़ुर्बानी का जानवर ख़रीदने की ताक़त न हो तो उसे दस रोज़े रखने होंगे, जैसा कि क़ुरआन मजीद में अल्लाह तआला का फ़र्मान है। सूरह बक़र आयत 196 में फ़रमाया--

"फ़ मन तमत्तअ़ बिल् उमृरति इलल् हज्जि फ़ मस्तैसर मिनल हदयि फ़ मल्लम यजिद फ़ सियामु सलासति अय्यामिन् फ़िल हज्जि व सब्अ़तिन इज़ा रजअ़तुम तिल-क अशरतुन कामि ल तुन्" (2:196)

तर्जुमा-जो कोई उमरे को हज से मिला कर फ़ायदा उठाना चाहे तो एक क़ुर्बानी करे, फिर जिसको क़ुर्बानी मयस्सर न हो, ऐसा शख़्स

हज के दिनों में तीन रोज़े रखे, और वतन वापस आने के बाद सात रोज़े रखे। इस तरह पूरे दस हुए।

नोट - क़ुर्बानी की ताक़त न रखने वाले तमत्तुअ़ के हाजी की सहूलत के लिए बेहतर यह है कि वह 6, 7, 8, ज़िलहिज्जा तीनों दिनों में रोज़े रखे या फिर 7, 8, 9, ज़िलहिज्जा को रोज़े रखे जिसमें सहूलत हो, 6, 7, 8, ज़िलहिज्जा में ज़्यादा सहूलत है। यह तफ़सील हमने इस लिए लिख दी कि ईद के दिन रोज़ा रखना मना है। आप भी 10 ज़िलहिज्जा को रोज़ा न रखें।

जिस शख़्स को क़ुर्बानी मयस्सर हो, वह क़ुर्बानी करे। रोज़ा रखने की उसपर कोई पाबन्दी नहीं। अलबत्ता यह हुक्म उसके लिए बयान किया जा रहा है, जो तमत्तुअ़ वाला उमरा और

तक़रीबन 100 मरहले पेश आयेंगे। इस मुख़्तसर किताबचे के ज़रिये हर मरहले हर मोड़ पर मशवरे, मालूमात और हिदायात आप को सिलसिलावार मिलती जायेंगी।

खादिम
अब्दुल करीम पारेख
नागपुर - 8
(इन्डिया)

रब्बि ज़िदनी इल्मा

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

(1) निय्यत :

पहला काम अल्लाह की रज़ा के लिए अपनी निय्यत को ख़ालिस कीजिए कि मैं अल्लाह के लिए उमरा और हज का सफ़र करने का इरादा करता हूँ। ऐ अल्लाह! तू मुझे कामयाब फ़रमा और मेरे लिए इस सफ़र की हर मंज़िल को आसान फ़रमा। क़ुरआन मजीद में अल्लाह तआ़ला का इरशाद है--

व अतिम्मुल हज्ज वल उ़म र त
लिल्लाहि

तर्जुमा :- हज और उमरा सिर्फ़ अल्लाह के लिए पूरा करो.

(2) सफ़र का ख़र्च :

जब इस मुबारक सफ़र का इरादा हो

जाये तो सामाने सफ़र यानी ख़र्च का इन्तेज़ाम अपने साथ रखे ताकि इस फ़रीज़े की अदायगी में किसी से मांगना न पड़े।

(3) मशवरा :

हमारा मशवरा है कि मियाँ बीवी दोनों एक साथ हज का सफ़र करें तो ज़्यादा आसान और कम ख़र्च में यह सफ़र इन्शा अल्लाह बहुत ही सहूलत का होगा।

(4) सामान :

ज़रूरी सामान में कम से कम चीज़ें साथ लें। मिसाल के तौर पर बिस्तर हलका फुलका, एहराम की दो चादरें होती हैं। यह डबल जोड़ा साथ रखें, ताकि धोने की सहूलत हो। नीचे के लिए ढाई मीटर और ऊपर के लिए दो मीटर, प्लास्टिक की दो बालटियाँ, इसमें अपनी ज़रूरत का सब सामान भर लें। कमर में बांधने का एक चमड़े का पट्टा, जो बम्बई में

मिलता है। पेटी साथ लेनी हो तो टीन या लोहे की हरगिज़ न लें, ताकि आप को और दूसरे मुसाफ़िरों को ज़ख़्म या चोट लगने का डर न रहे।

याद रखें कि बग़ैर सिली चादरें पहन कर जब आप एहराम की हालत में होंगे तो जेब न होने के सबब दिक़्क़त व परेशानी न हो, इसलिए कपड़े के बने हुए बस्ते, कांधे पर लटकाने के लिए रख लें।

चमड़े या रेगज़ीन का बस्ता भी हो तो एहराम की हालत में पासपोर्ट और ज़रूरी काग़ज़ात और नोट वग़ैरा रखने में सहूलत होगी, साथ ही तमाम ज़रूरी कागज़ात की फ़ोटो कापियाँ ज़रूर बनवा लें। और यह सब साथ रखें।

(5) हज कमेटी :

हज के सफ़र में हज कमेटी के ज़रीये

हज बहुत आसान होता है, लेकिन अब दिल्ली और मद्रास वग़ैरा से भी हाजी साहेबान सफ़र करते हैं, इसमें भी सहूलत होती है।

लेकिन चन्द हज व ज़ियारत कराने वाली कंपनियाँ भी INTER NATIONAL PASSPORT इन्टर नेशनल पासपोर्ट (बैनुल अक़्वामी पास पोर्ट) के ज़रीये हज कराने ले जाती हैं; लेकिन तजुर्बे से यह मालूम हुआ कि इन के मुक़ाबले में हज कमेटी के ज़रीये ही सफ़र का इन्तेज़ाम सरकारी ज़ाब्ते सहूलत और आसानी वाला होता है।

भारत सरकार के 1959 के पार्लियामेंट एक्ट नं. 51 के तहत कानून के दायरे में Foreign Currency यानी "ज़रे मुबादला" आप को रियाल की शक्ल में जद्दा में मिलेगा, और दीगर सहूलतें भी दे रखी हैं। इस लिए हज

कमेटी के ज़रीये ही हज का सफ़र ज़्यादा मुनासिब है।

हज कमेटी वाले पूरे जहाज़ में हाजियों को लाने ले जाने का इन्तेज़ाम करते हैं। इस में हाजी लोगों को सफ़र की तकलीफ़ बहुत कम होती है।

(6) काग़ज़ी कारवाई :

जैसे ही हज कमेटी का ऐलान नामा शाये हो, आप इस के फ़ॉर्म मंगाकर भर कर भेज दें, और वहाँ से इजाज़त मिलने पर जिस ता:रीख़ का आप का जहाज़ हो, उसके चन्द दिन पहले बम्बई पहुँच जायें, यानी हज कमेटी के हुक्म के मुताबिक़ बम्बई हाज़िर हों। हज कमेटी हर हाजी की दरख़्वास्त के साथ एक पम्फ़लेट भी भेजती है यानी हिदायत नामा, जिसमें डाक्टरी सर्टीफ़िकेट और फ़ोटो कापियाँ, ड्राफ़्ट और दीगर

मतलूबा मालूमात अच्छी तरह लिखी होती हैं। इन्हें पढ़कर उसके मुताबिक़ काग़ज़ी कारवाई तैयार कर ली जाती है।

(7) फ़ोटो कापियाँ :

अपने अपने फ़ोटो की चन्द कापियाँ और भी अपने साथ रखें, ताकि वक़्ते ज़रूरत काम पड़े तो परेशान न होना पड़े।

(8) हाजियों के ख़ादिम :

बम्बई में अलहम्दु लिल्लाह एक तवील अर्सा हुआ, हज कमेटी के तआवुन में दूसरे अहले ख़ैर हज़रात हुज्जाज केराम की बहुत अच्छी ख़िदमत करते हैं।

बम्बई में ऐसे मुख़लिस कारकुन आप को मुसाफ़िर खाने या हज हाऊस में मिलते ही रहेंगे। उनसे राब्ता कायम करके मालूमात हासिल कर लें।

(9) उमरे का एहराम :

आप के जहाज़ का दिन तो आप को मालूम हो चुका । अब आप को एहराम बांधना है। ग़ुस्ल कीजिये और बा वुज़ू होकर एहराम पहन लें। एक तहबन्द यानी बग़ैर सिली लुंगी और एक चादर कांधों पर डाल लें। सर खुला हुआ और पैर में एक ऐसी चप्पल पहन लें जो आजकल की हवाई चप्पल की तरह हो।

आज आपको उमरे की निय्यत का एहराम बांधना है यानी तमत्तुअ़ के हज वाला सफर आप उमरे से शुरू कर रहे हैं, इसलिए आप को हज के तीनों क़िस्मों की मालूमात हम दे रहे हैं। आपको यह मशवरा भी देते हैं कि आप तमत्तुअ़ वाले हज का फ़ैसला करें। इस में सहूलत और आसानी है।

पहले उमरे की निय्यत से एहराम बांध लें, फिर उमरा कर के मक्का मुअ़ज़्ज़मा में

क़याम करें और हज के दिन आने पर मक्का मुकर्रमा में आप को हज का एहराम बांधना है।

अब हम आप को तीनों क़िस्मों की मुख़्तसर मालूमात दे रहे हैं।

(10) हज की तीनों क़िस्मों की मुख़्तसर पहचान :

1) हज्जे इफ़राद 2) हज्जे क़िरान
3) हज्जे तमत्तुअ़

पहली क़िस्म हज्जे इफ़राद :

जो हज अकेला यानी सिर्फ़ हज ही किया जावे, उमरा इसके साथ न हो, तो ऐसे हज को हज्जे इफ़राद कहते हैं।

हज की इस क़िस्म में हाजी हज से पहले उमरा नहीं करेगा, यानी एहराम बांध कर चलने से लेकर हज के पूरा होने तक ऐसे हाजी को मुसलसल एहराम की तमाम पाबन्दियों पर

अ़मल करना होगा। जो आम लोगों के लिए ज़रा मुश्किल काम है, और एक तवील मुद्दत तक हर हाजी के लिए इन पाबन्दियों को निभाना बड़ी मेहनत का काम है। अल्लाह तआ़ला के जो ख़ास बन्दे हैं, वे हज्जे इफ़राद का एहराम बांध लेने की हिम्मत कर लेते हैं।

(11) दूसरी क़िस्म ."हज्जे क़िरान" :

एक ही निय्यत के साथ मुसलसल जारी रखते हुए एक ही बार के एहराम को उमरा और हज दोनों के लिए इस्तेमाल कर लिया जाये। उमरा करने के बाद बीच में एहराम न खोला जाय, बल्कि इस एहराम को पाबन्दी के साथ हज पूरा होने तक मुसलसल जारी रखा जाए, ऐसे हज को "हज्जे क़िरान" कहते हैं।

इस में हाजी लोग उमरा और हज दोनों का एहराम एक साथ बांधने की निय्यत करते हैं,

और काबा शरीफ़ पहुँच कर पहले उमरा करते हैं और हज के दिन आने तक मुसलसल एहराम ही की हालत में रहते हैं, और इसी एहराम से वे हज के पहले दिन 8 ज़िलहिज्जा को मिना पहुँचते हैं, फिर हज के तमाम अरकान पूरे करने के बाद एहराम से बाहर आ सकते हैं।

इसमें समझने की बात यह है कि अगर काबा शरीफ़ पहुँच कर हज के दिन में 20, 30 दिन या इससे कम ज़्यादा की देर हो तो इस दौरान एहराम मैला हो जाने पर एहराम को धोने के लिए दूसरा एहराम बांधा जा सकता है, मगर एहराम की मुसलसल तमाम शर्तें हज पूरा करने तक क़िरान वाले हाजियों पर लाज़िम हैं।

हज का यह तरीक़ा भी आम लोगों के लिए निभाना कठिन है। अल्लाह के कुछ मुत्तक़ी और परहेज़गार बन्दे क़िरान की निय्यत वाला

हज आज भी करते हैं, मगर हम सहूलत पसन्द लोगों के लिए इस्लामी शरीअ़त ने हज की एक तीसरी क़िस्म जिसे तमत्तुअ़ का हज कहते हैं, इसकी इजाज़त दी है। और आम लोग भारी संख्या में इसी क़िस्म का हज अदा करते हैं, जिसका बयान हम आगे दे रहे हैं।

(12) तीसरी क़िस्म-"हज्जे तमत्तुअ़" :

तमत्तुअ़ का तरीक़ा यह है कि पहले एहराम तमत्तुअ़ वाले उमरे की निय्यत से बांधा जाए और मक्का मुअ़ज़्ज़मा पहुँच कर उमरे के तमाम आदाब पूरे करने के बाद ऐसा हाजी एहराम से बाहर आ जाता है, और अपने मुल्क में जैसे कपड़े पहनता है वैसे कपड़े पहन कर एहराम की पाबन्दियों से आज़ाद हो जाता है, और मक्का शरीफ़ में हज के दिन आने तक बग़ैर एहराम के क़याम करने की उसे शरअ़ी इजाज़त मिल जाती है।

(13) सहूलत का फ़ायदा उठाना :

उमरे के एहराम की हालत से निकल कर हज के आने तक मक्का मुअ़ज़्ज़मा में क़याम का इस हाजी ने फ़ायदा उठाया, सहूलत हासिल की। इसी को तमत्तुअ़ कहते हैं।

ऐसा हाजी 8 ज़िलहिज्जा को हज की नियत का एहराम बांध कर हज के तमाम अरकान पूरे करता है। ऐसे हज में उमरा और हज, एक ही सफ़र में किया जा सकता है। इसलिए बाहर के मुल्कों से आने वाले हर हाजी को हज का सफ़र आसान पड़ता है, इसलिए हम मशवरा देते हैं कि भारत, पाकिस्तान, बंगला देश से हज के सफ़र को जाने वाले लोग तमत्तुअ़ के हज की नियत कर लें। और इस तरह करें कि पहले उमरा की नियत से एहराम बांधे, बैतुल्लाह की ज़ियारत का सफ़र शुरू करें,

और मक्का मुअ़ज़्ज़मा पहुँच कर उमरे के अहकाम पूरे करने के बाद मक्का शरीफ़ में सुकूनत का शरअ़ी परवाना हासिल कर लें, ताकि हज का दिन आने तक उन को एहराम की पाबन्दियों से आज़ादी की सहूलत हासिल हो।

चूँकि तमत्तुअ़ का हज करने वाला पहले उमरा कर लेता है और एहराम की पाबन्दियों से आज़ाद होकर मक्का मुकर्रमा में क़याम करने का फ़ायदा उठाता है। यानी एक तरह से वह मक्का वालों की तरह हो जाता है। दूसरा फ़ायदा उस हाजी को यह होता है कि ऐसे शख़्स को हज का एहराम मक्का मुअ़ज़्ज़मा से बांध लेने की इजाज़त है, उसे अब मक्का की सरहद से बाहर जाकर किसी मीक़ात से एहराम बांधने की ज़रूरत नहीं।

अब चूँकि तमत्तुअ़ करनेवाले हांजी ने

बहुत से फ़ायदे उठाये हैं, इसलिए उस पर लाज़िम है कि एक क़ुर्बानी हज के दिनों में करे। अगर क़ुर्बानी का जांनवर ख़रीदने की ताक़त न हो तो उसे दस रोज़े रखने होंगे, जैसा कि क़ुरआन मजीद में अल्लाह तआला का फ़र्मान है। सूरह बक़र आयत 196 में फ़रमाया--

"फ़ मन तमत्तअ़ बिल् उम्‌रति इलल् हज्जि फ़ मस्तैसर मिनल हदयि फ़ मल्लम यजिद फ़ सियामु सलासति अय्यामिन् फ़िल हज्जि व सब्‌अ़तिन इज़ा रजअ़तुम तिल-क अशरतुन कामि ल तुन्" (2:196)

तर्जुमा-जो कोई उमरे को हज से मिला कर फ़ायदा उठाना चाहे तो एक क़ुर्बानी करे, फिर जिसको क़ुर्बानी मयस्सर न हो, ऐसा शख़्स

हज के दिनों में तीन रोज़े रखे, और वतन वापस आने के बाद सात रोज़े रखे। इस तरह पूरे दस हुए।

नोट - क़ुर्बानी की ताक़त न रखने वाले तमत्तुअ़ के हाजी की सहूलत के लिए बेहतर यह है कि वह 6, 7, 8, ज़िलहिज्जा तीनों दिनों में रोज़े रखे या फिर 7, 8, 9, ज़िलहिज्जा को रोज़े रखे जिसमें सहूलत हो, 6, 7, 8, ज़िलहिंज्जा में ज़्यादा सहूलत है। यह तफ़सील हमने इस लिए लिख दी कि ईद के दिन रोज़ा रखना मना है। आप भी 10 ज़िलहिज्जा को रोज़ा न रखें।

जिस शख़्स को क़ुर्बानी मयस्सर हो, वह क़ुर्बानी करे। रोज़ा रखने की उसपर कोई पाबन्दी नहीं। अलबत्ता यह हुक्म उसके लिए बयान किया जा रहा है, जो तमत्तुअ़ वाला उमरा और

हज एक ही सफ़र में करे, और एक क़ुर्बानी न कर सके तो तीन रोज़े हज के दिनों में रख ले और अपने वतन वापस आने के बाद सात रोज़े रखे, इस तरह 10 रोज़ों की गिनती पूरी हो जायेगी।

(14)हज और उमरे का फ़र्क़ :

- ✡ हज फ़र्ज़ है और उमरा फ़र्ज़ नहीं।
- ✡ हज एक मुक़र्रर वक़्त पर होता है, उमरा साल भर हो सकता है।
- ✡ उमरा सिर्फ़ 9 ज़िलहिज्जा से 13 ज़िलहिज्जा तक नहीं हो सकता क्यों कि ये हज के ख़ास दिन हैं।
- ✡ उमरे में अर्फ़ात और मुज़दल्फ़ा में जाना नहीं पड़ेगा।
- ✡ उमरे में तवाफ़ शुरू करते ही तल्बिया पढना बंद हो जाता है।

✡ हज में जमरतुल अक़्बा की रमी शुरू करते वक़्त तल्बिया पढ़ना बंद किया जाता है।

उम्मीद है कि आपने सहूलत वाले हज यानी हज्जे तमत्तुअ़ का फ़ैसला किया होगा, इस में आपने बम्बई या किसी और मुक़ाम के अपने हवाई अड्डे Airport से उमरे की निय्यत का एहराम बांधा और जहाज़ में सवार हो चुके। अल्लाह का शुक्र अदा कीजिए। अब आपको मुसलसल तल्बिया कहते रहना है।

(15) तल्बिया :

लब्बैक अल्लाहुम्मा लब्बैक. लब्बैक ला शरीक लक लब्बैक इन्नल हम्द वन्निअ़मत लक वल मुल्क ला शरीक लक.

तर्जुमा मैं हाज़िर हूँ ऐ अल्लाह, मैं हाज़िर हूँ तेरे हुज़ूर हाज़िर हूँ। तेरा कोई शरीक नहीं, बेशक हम्द और शुक्र का मुस्तहिक़ (लायक़) तू ही है। इनाम व एहसान तेरा ही काम है। बादशाही सिर्फ़ तेरे लिए है। तेरा कोई शरीक नहीं।

जहाज़ में हर वक़्त तल्बिया पढ़ते रहें। तौबा और इस्तिग़फ़ार, हम्द व सना और दरूद शरीफ़ की ख़ूब कसरत रखें। लड़ाई झगड़ा, हुज्जत बहस तकरार क़तई तौर पर बन्द कर दें। किसी भी हाजी की दी हुई तकलीफ़ पर सब्र करें। चीखें चिल्लायें नहीं। नमाज़ का एहतिमाम करें। हर वक़्त बावुज़ू रहने की कोशिश करें, ताकि नमाज़ें अदा करने में आसानी हो।

(16) जद्दा एअर पोर्ट-हज टर्मिनल :

जद्दा एअर पोर्ट पर बिस्मिल्लाह कह

कर उतरें। तल्बिया पढ़ना जारी रखें। वहाँ आप को आहिस्ता आहिस्ता उतरना है। गड़बड़ या उजलत कहीं भी न करें। क़तार बांधकर चलें। आपके जहाज़ के तमाम हाजीयों को एक बड़े हॉल में ले जाया जायेगा। अलहम्दुलिल्लाह वहाँ वुज़ूख़ाने, ग़ुसुलख़ाने, पाख़ाने और पानी का ख़ूब इन्तेज़ाम है। नमाज़ भी पढ़ें। वहाँ जैसे ही आप उतरें, अपनी घड़ी का वक़्त जद्दा की घड़ी से मिलाइये।

भारत और सऊदी अरब में तक़रीबन 2½ ढाई घन्टे का फ़र्क़ है। आप की घड़ी में अगर पांच बजे हैं, और आप अ़स्र की नमाज़ पढ़ चुके हैं, लेकिन जद्दा उतरते ही 2½ ढाई बजे होंगे। वहाँ अ़स्र का वक़्त अभी नहीं हुआ होगा। आप ने जो अपने वक़्त पर जहाज़ पर नमाज़ पढ़ ली थी, वह सही और दुरूस्त है।

लिहाज़ा, इस बड़े कमरे में बैठे रहिए। अपने अपने पासपोर्ट, टिकट, ज़रूरी कागज़ात वग़ैरा सब संभाल कर रखें, यहाँ पर आप के Embarkation Card (सफ़र के पहचान पत्र) चेक होंगे। थोड़ी देर बाद आप को दूसरे हाल में ले जाया जायेगा। औ़रतों को अलग मर्दों को अलग लाइन में ।

(17)दूसरे हॉल में :

दूसरे हॉल में जाते वक़्त आप के पास पोर्ट पर सऊ़दी अ़रब का सिक्का लगेगा और पास पोर्ट आप को वापस कर दिये जायेंगे।

(18)तीसरे हॉल में :

अब एक बहुत बड़े कमरे में आप को दाख़िल होना है। यहाँ आप अपना तमाम सामान मौजूद पायेंगे। आपको अपना सामान ढूंढना पड़ेगा। चूँकि आप ने अपने हर सामान पर ख़ास

निशान और अपना नाम व पता लिखा लिया था या ख़ुद ही लिख लिया था, इसलिए पहचानने में इन्शाअल्लाह कोई दिक़्क़त नहीं होगी। याद रखें कि हर सामान पर घर से निकलने से पहले अंग्रेज़ी या अ़रबी में अपना नाम और पता लिखा लिया जाये, जैसे

ABDUL KARIM PAREKH

NAGPUR - 8 (M.S.) INDIA, तमाम मुल्कों के हाजी इस सर ज़मीन पर आते हैं, इसलिए अपने मुल्क का नाम भी सामान पर लिखना ज़रूरी है, ताकि सामान कहीं गुम न हो जाये।

(19) कस्टम सामान की चेकिंग :

आप अपना सामान कस्टम ऑफ़िसरों के टेबल पर रखते जायें। वे लोग सामान को जांच कर तलाशी लेंगे। पके हुए अनाज या पकी हुई चीज़ें हरगिज़ न ले जायें। आम तौर पर

सऊ़दी अ़रब में अलहम्दु लिल्लाह हर चीज़ मिलती है और सस्ती भी होती है। अचार वग़ैरा पर अगर किसी अफ़सर की निगाह पड़ी तो छीन कर फेंक दिया जायेगा। कोई भी लिटरेचर या क़ब्र परस्ती, शिर्क व बिदअ़त वाली किताबें या क़ादियानी, रज़ाख़ानी किताबें होंगी तो वे भी ज़ब्त कर ली जायेंगी।

मुसलमानों को काफ़िर बनाने और बतलाने वाले हर किताबचे को ये अफ़सरान बहुत बारीकी से देखते हैं। कहीं आप को कोई ऐसी परेशानी न उठानी पड़े, इसका ख़ूब ख़याल रखें।

हमारे मुल्क के बहुत से पेट भरू मौलवी मुल्ला लोग हरम शरीफ़ और मदीना मुनव्वरा की मस्जिदे मुबारक के तमाम इमामों को काफ़िर कहते हैं और लिखते भी हैं। इनके पीछे नमाज़

पढ़ना मना बताते हैं। ऐसे फ़सादी लोगों की वहाँ की हुकूमत ख़ूब ख़बर लेती है। इस लिए आप को ऐसे फ़िर्के और टोली से परहेज़ करना चाहिए। जो मुसलमानों में फूट डालने के लिए मुस्लिम दुश्मन ताक़तों के एजन्ट बनकर वहाँ हुज्जाज केराम में लड़ाई झगड़ा कराते हैं।

(20) कस्टम से बाहर बैंक से रक़म हासिल कीजिए :

कस्टम से बाहर निकलने के बाद आप का सामान हज कमेटी के कारकुन ले लेंगे और रंगाड़े में भर कर भेज देंगे और आप को फिर पासपोर्ट दिखा कर आगे के सारे सफ़र की बस की टिकटें मिलेंगी। आप उसे लेकर हज कमेटी के वालेंटीयर्स की बताई हुई जगह पर पहुँच जाएं। यहाँ आप अपना सामान फिर से हासिल कर लें।

यहीं पर आपको मोअ़ल्लिम, मकान और कमरा नंबर का अलाटमेंट होगा। मदीना जाने की तारीख़ का और आप के क़याम के दौरान बसों की टिकट वग़ैरह का अलाटमेंट होगा।

एक फ़लाईट वालों को एक ही मकान में उतारा जायेगा आप के पासपोर्ट पर पीला स्टीकर (Sticker) मोअ़ल्लिम के नंबर का लगा दिया जाएगा।

यहाँ हर मिनट पर हाजियों के जहाज़ लगातार उतरते रहते हैं। हुकूमत के लोग हर काम फुर्ती से करते हैं। आप भी चुस्त, चाक व चौबन्द और चौकस रहें। अब आप सामने बैंक से अपने ड्राफ्ट की रक़म हासिल कर लें अब आप अपनी रक़म ख़ूब अच्छी तरह से अपने गले में बंधी लटकन बस्ते में रख लें। अगर चमड़े का कमर पट्टा हो तो कुछ उस में भी रख

लें, कुछ पैसे पेटी में रख लें। कुछ अहलिया मोहतरमा को रखने के लिए दे दें। इस तरह रक़म चार पाँच जगह होने से गुम होने पर, पूरी रक़म के गुम होने का अन्देशा न रहेगा।

याद रखें कि आप को रक़म गिनती करने की ज़रूरत नहीं। रक़म का बन्डल पैकिंग वाला होगा, इस में 100 वाले, 10 वाले, 1 वाले रियाल के नोट होंगे, ताकि आप को ख़र्च के वक़्त दिक़्क़त न हो।

और अब आप बसों का इन्तेज़ार करें। हज कमेटी के वालेंटियर्स आप को बसों में बिठा कर मक्का शरीफ़ रवाना करेंगे।

आप का सामान बसों की लाईन के क़रीब ट्राली में ले जाया जायेगा आप सामान के पास जाकर अपना सामान अपनी बस में लदवा लें।

(21) इम्तिहान :

यहाँ आपका थोड़ा सा इम्तिहान है। एक तरफ़ रक़म संभाल के रखना है, दूसरी जानिब यहाँ कुछ लोग आकर हाजियों के हमदर्द बनकर ड्राफ़्ट की रक़म ला देने की पेशकश करते हैं। आप उन पर बिल्कुल भरोसा न करें, फिर चाहे बज़ाहिर कितने ही अच्छे लोग हों, बल्कि बैंक की खिड़की पर आप और अहलिया खुद खड़े हों, वहाँ एक मिनट भी नहीं लगेगा, आप की रक़म तैयार बन्डल बन्धी हुई फ़ौरन आपको मिल जाएगी। बस, रक़म लेकर सामान के पास आ जायें।

एहराम की हालत में बग़ैर सिले कपड़े, फ़क़ीर जैसा लिबास, अंजान जगह, लेकिन आप हिम्मत न हारें बल्कि पहले हाजत वग़ैरा से फ़ारिग़ हो लें, चाहें तो ग़ुस्ल भी कर लें, चाहें

नाश्ता भी कर लें। हर चीज़ यहाँ मिलती है और सामान के पास आ जायें। बस सामने खड़ी है मक्का शरीफ़ जाने के लिए आप को उस में सवार होना है।

(22) मक्का शरीफ़ के लिए रवानगी :

आप का सामान क़ुली लोग बस में रखेंगे। आप भी उन की मदद करेंगे और अल्लाह पाक का नाम लेकर बस में बैठ जायें। तल्बिया पढ़ना जारी रखें। आपका पास-पोर्ट सरकारी आदमी बस में सवार होने से पहले आपसे ले लेंगे और बस ड्राईवर को दे देंगे, आप बेफ़िक्र रहें, आप ने जो ज़रुरी काग़ज़ात के फ़ोटो बनवाये थे, वे अपने पास महफ़ूज़ रखिये ताकि ज़रूरत के वक़्त सहूलत हो।

(23) याद रखिए :

चलते वक़्त आपने जो काग़ज़ात के

फ़ोटो निकलवाये थे, ये आपके साथ हैं। ख़ुदा न करे कभी पासपोर्ट या ड्राफ़्ट या और कोई काग़ज़ गुम हो जाये तो क़ानूनी पहलू से ये फ़ोटो कापियाँ आप को काम आएंगी और आपको आसानी होगी।

(24) अब आप मक्का शरीफ़ पहुँचने वाले हैं :

आप की बस इन्शा अल्लाह अब मक्का शरीफ़ में दाख़िल होगी। हरम शरीफ़ के मिनारे दूर से दिखाई देने पर आपके दिल की कैफ़ियत का अन्दाज़ा आप-ही को होगा। ऐसे वक़्त ख़ास तौर से दुआ में मश्ग़ूल रहें।

(25) हरम शरीफ़ अलहम्दु लिल्लाह आ गया :

यहाँ पर बस वाला आप के मोअ़ल्लिम के आफिस के पास रूकेगा। मोअ़ल्लिम का

आदमी बस में चढ़ कर आप को ज़रूरी हिदायत देगा।

अब मोटर बस आप को आप के लिए अलाट किए हुए मकान पर ले जाएगी। वहाँ पर बस का सामान मोअ़ल्लिम के हम्माल उतार कर आपकी बिल्डिंग में पहुँचा देंगे।

आप को अपने मुअ़ल्लिम का नाम या नंबर जो भी हो याद रखना ज़रूरी है। यहाँ पर बस वाला आपके पासपोर्ट मुअ़ल्लिम के हवाले कर देगा। मुअ़ल्लिम अपने रजिस्टर में उसे दर्ज करेगा। आपको भी इसमें राहत है कि आपके पासपोर्ट मुअ़ल्लिम के यहाँ जमा हैं। अगर आपको अपनी रक़म जमा करानी है, तो मुअ़ल्लिम के पास बड़ी रक़म जमा करा दें, वह आपको रसीद देगा। आप बेफ़िक्र रहें। यहाँ कोई किसी की ख़यानत नहीं कर सकता। अब

आप अपना सामान मुअ़ल्लिम के यहाँ रख दें।

अगर मुअ़ल्लिम के यहाँ ढंग के पाख़ाने हों तो ठीक, वरना फिर सड़क पर आकर देखें, आप को जगह जगह Laki Laki वुज़ू खाना Toilet लिखे हुए कमरे दिखाई देंगे। औरतों के अलग, मर्दों के अलग। आप अन्दर जैसे ही दाख़िल होंगे, एअर कन्डीशन एक से एक बड़े हॉल में कई कई सौ पाख़ाने, निहायत अच्छे, साफ़ सुथरे, और पानी का इन्तेज़ाम ख़ूब से ख़ूब तर। आप हाजत से फ़ारिग हों, ग़ुस्ल करना हो तो ग़ुस्ल कर लें। फ़ारिग़ हो जाने पर वुज़ू करके अब आप अकेले हों या बीवी साथ हो, दोनों हरम शरीफ़ की तरफ़ फ़ौरन चलना शुरू कर दें। हरम शरीफ़ के कई कई दरवाज़े हैं, जो क़रीब हो उसमें दाख़िल हो जायें।

(26) पहला तवाफ़ :

काबा शरीफ़ पर आपकी पहली नज़र पड़ेगी, बस दुआ़ की मक़बूलियत का एक मौक़ा आपके हाथ आ गया। कोई मुख़्तसर और जामेअ़ दुआ़ याद हो या फिर अपनी ही ज़बान में कर लें। अगर हो सके तो अर्ज़ करें, या अल्लाह! अब जो भी तुझसे मांगू और मेरे लिए भली हो, वह दुनिया और आख़िरत की हर नेअ़मत मुझे अ़ता फ़रमा दे।

आप देखेंगे कि हज़ारों आदमी काबा का तवाफ़ कर रहे हैं। आप भी इनमें शामिल हो जायें।

(27) हज्रे अस्वद :

काबा शरीफ़ के मशरिक़ी कोने में हज्रे अस्वद को बोसा देकर तवाफ़ शुरु करें। अगर बोसा न दे सकें तो दूर से दोनों हाथ उठाकर

बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अकबर कह कर तवाफ़ शुरू करें हज्रे अस्वद आने पर बोसा मिले तो सुबहानल्लाह न मिले तो दूर से दोनों हाथ कानों तक उठाकर बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अकबर कहकर तवाफ़ पूरा करें।

(28) मुल्तज़म :

काबा शरीफ़ के दरवाज़े और हज्रे अस्वद के बीच की जगह को मुल्तज़म कहा जाता है। वहाँ मौक़ा मिले तो ख़ूब चिमटकर दुआ करें। भीड़ ज़्यादा होने पर दूर खड़े होकर मुल्तज़म की तरफ़ मुँह कर के भी दुआ कर सकते हैं। यहाँ पर आप दुआ करें। दुनिया, आख़िरत सब कुछ मांग लें और काबा शरीफ़ की चौखट पर जहाँ तक आप के पंजे, पहुँच सकें दहलीज़ तक उंगलियाँ चिपका कर जो दुआ याद की हो या अपनी ज़बान में जैसी दुआ करनी हो कर सकते हैं।

क़ुबूलियते दुआ के अब आपको एक से एक मौक़े हासिल हैं। देखना यह है कि क्या कुछ और कैसे मांगते हैं।

(29) मक़ामे इब्राहीम (अ़लै.) :

मुल्तज़म की दुआ ख़त्म होने पर आपको मुक़ामे इब्राहीम के पास दो रकअ़त नमाज़ पढ़ने के लिए अब आना है।

इरशादे रब यूँ है--

वत्तख़िज़ू मिम्मक़ामि इब्राहीम मुसल्ला.
(2:125)

तर्जुमा - इब्राहीम के खड़े होने के मुक़ाम पर नमाज़ अदा करो।

यह मुक़ाम काबा शरीफ़ के सामने है। हज़रत इब्राहीम (अ़लै.) जिस चट्टान पर नमाज़ के लिए खड़े होते थे, उसके एक मुक़ाम पर हज़रत इब्राहीम (अ़लै.) के क़दमों के निशान

पड़ गये हैं। यह मुक़ाम शीशे की बनी हुई गुंबद में बन्द है। बाहर से साफ़ दिखाई देता है। यहाँ पर आस पास में जहाँ भी जगह मिले आप दो रकअ़त वाज़िबुल तवाफ़ अदा करें कि अल्लाह ने अपने घर के दरवाज़े पर आपको तलब फ़रमाया। आप इस नेअ़मत पर अल्लाह का शुक्र अदा करें। दो रकअ़त वाजिबुल तवाफ़ के पहले या बाद में जैसा मौक़ा हो मुल्तज़म, बाबे काबा और हतीम में दुआ़ करें। बाबे काबा, बैतुल्लाह शरीफ़ का दरवाज़ा है, और हतीम उस जगह को कहते हैं, जो काबतुल्लाह का हिस्सा है, लेकिन काबा शरीफ़ की तामीर में उसे शामिल न किया जा सका । शायद इस की यह वजह भी हो कि जो लोग काबा शरीफ़ के अन्दर दाख़िल न हो सकें, वे उस जगह आसानी से दुआ इस्तिग़फ़ार में मशगूल हो [illegible] लज्जत

और ईमान की मिठास हासिल कर लें, जो कि काबा शरीफ़ के अन्दर दाख़िल होने वालों को मयस्सर होती है।

(30) ज़म ज़म :

जनाब हाजी साहब, अभी आप उमरे से फ़ारिग़ नहीं हुए। चलिए आबे ज़म ज़म की तरफ़। यह एक कुँआ है, बहुत छोटा सा, लेकिन सारी दुनिया के समन्दर से ज़्यादा पानी यहीं से निकलता है। खूब नल लगे हैं। जी भर के पीजिये। चाहे गले तक पी सकें यह आबे ज़मज़म ताज़ा ताज़ा आपको आज मिला है। इस पर अल्लाह का शुक्र और उसकी बड़ाई बोलें।

(31) सअ़ी सफ़ा व मर्वा :

अब आप हज्रे अस्वद की सीध पर नज़र डालें। लाखों आदमी दौड़ रहे हैं। यह सफ़ा और मर्वा पहाड़ियाँ हैं। जिनके दरमियान

आप को सात फेरे लगाने हैं। इन सात फेरों के दौरान आप को दो हरे रंग के पट्टे मिलेंगे, उनके बीच आपको ज़ोर से चलना या दौड़ना है।

1) सफ़ा से मर्वा 2) मर्वा से सफ़ा
3) सफ़ा से मर्वा 4) मर्वा से सफ़ा
5) सफ़ा से मर्वा 6) मर्वा से सफ़ा
7) सफ़ा से मर्वा

ठीक सातवें दौड़ में आप मर्वा पर पहुँच गये। अलहम्दु लिल्लाह, अब आपकी सअ़ी पूरी हो गई। यहाँ जितनी दुअ़ा कर सकें, कर लें, और अब हजामत बना लें यानी सर मुंडा लें। बहनें अपनी चोटी में से एक उंगल बाल कतर लें। इसके लिए एक छोटी सी क़ैंची साथ हो तो आसानी होती है और अगर क़ैंची न हो तो क़ैंची यूँ भी लोग बतौर सवाब देते हैं, और एक

रियाल देने पर तो और भी आसानी होती है।

अलबत्ता मर्दों को सर मुंडाने के लिए मर्वा के बाहर उ़मदा सलून बने हैं यहाँ अपना सर मुंडा लेना चाहिए। कुछ लोग सर नहीं मुंडाते बल्कि कुछ बाल कतरवा लेते हैं। यह भी मस्अला मसाइल की रू से सही है। हम को किसी बात में इख़्तिलाफ़ कर के लड़ाई झगड़ा नहीं करना चाहिए, क्यों कि क़ुरआन मजीद में दोनों बातों का ज़िक्र मौजूद है। देखिए (48) अल फ़तह, आयत नंबर 27

लक़द सदक़ल्लाहु रसूलहुर्रूअ या बिलहक़्क़ि ल तदखुलुन्नल् मस्जिदल हराम इन्शाअल्लाहु आमिनीन मुहल्लिक़ीन रुऊसकुम व मुक़स्सिरीन ला तख़ाफ़ून. (48 : 27)

तर्जुमा - अल्लाह ने सच कर दिखाया अपने रसूल (स.) के उस ख़्वाब को, जिसमें

दिखाया गया था कि मस्जिदे हराम यानी अदब वाली मस्जिद में तुम इन्शाअल्लाह दाख़िल होंगे। पूरी तरह अम्न में बेख़ौफ़ होकर अपने सरों को मुंड्वाते होंगे और बालों को कतरवाते भी होंगे।

इस आयते शरीफ़ा में अल्लाह तआ़ला ने सर मुंडाने और बाल कतरवाने दोनों का तज़्किरा फ़रमाया। इस लिए ऐसे मौक़े पर किसी हाजी साहब से बहस तकरार में हिस्सा न लेते हुए सिर्फ़ इबादत ही में ध्यान लगाना चाहिए। जिसका जैसा मसलक हो, वैसा करने से रोका भी न जाये और बुरा भी न कहा जाये।

(32) एहराम से बाहर :

अब आप एहराम से बाहर आ गये। आप का उमरा अलहम्दु लिल्लाह हो गया। आप चूंकि तमत्तुअ़ वाले हज का इरादा कर के आये थे, लिहाज़ा अब आप मक्का मुकर्रमा में बग़ैर

एहराम की हालत में क़याम कर सकते हैं। हज के दिन आने तक आप तवाफ़े काबा में ख़ूब से खूब वक़्त लगायें और दुआ मुनाजात, तिलावत, तौबा इस्तिग़फ़ार का खूब एहतिमाम फ़रमायें।

अगर हज के पहले मदीना शरीफ़ जाने का प्रोग्राम बने तो इस किताब में आगे आने वाले नं. 58 ज़ियारते मदीना पढ़ लें। आप को सफ़र के बारे में पूरी मालूमात मिल जायेगी।

(33) हज के दिन आने तक आप का हरम शरीफ़ में क़याम :

हज का पहला दिन आने तक आप को मक्का शरीफ़ में क़याम करना है। उसका ख़ाका बना लें। हमारे ख़याल में आप का टाईम टेबल कुछ इस तरह का हो। बाज़ार में ख़रीदारी के लिए न जाएं, बल्कि ज़रूरत की चीज़ें, वे भी राह चलते मिलती जायेंगी, ख़रीद लें।

मिसाल के तौर पर खजूर, तली हुई मुर्गी, अन्डा, अनार, केला, सेब वग़ैरा। रोटी तो अलहम्दु लिल्लाह बग़ैर ख़र्च के मिल जाती है।

(34) ख़रीदारी :

मक्का शरीफ़ के बाज़ार में सारी दुनिया का सामान है, मगर आप के पास वक़्त कहाँ? वैसे यह सामान कहीं भी मिल जाएगा, चाहे कुछ महंगा हो। यहाँ पहुँचने की निय्यत तो अल्लाह की रज़ा है। बाक़ी रहा सामान, तो भाई हाजी साहेबान! मक्का शरीफ़ से ज़मज़म के डब्बे भर लें और मदीना शरीफ़ से खजूर चाहे जितनी क़िस्म की साथ ले सकें, ख़रीद लें। बाक़ी तमाम चीज़ें जापान, अमरीका और इन्डिया की होती हैं। आप के मुल्क में भी मिल जाएंगी। मगर तवाफ़े बैतुल्लाह आप को मक्का शरीफ़ के सिवा कहीं नहीं मिल सकता। इस लिहाज़ से हमारी

चन्द बातों पर अपना Time table निज़ामुल औक़ात बना लें।

(35) निज़ामुल औक़ात :

आप रात में तीन बजे उठ जाएं। राह चलते आप को उस वक़्त Laki Laki Toilet वुज़ूख़ाने मिलेंगे। हाजत से फ़ारिग़ होकर ग़ुस्ल करना हो तो कर लें। वुज़ू करके हरम शरीफ़ में दाख़िल हों। तहज्जुद की नमाज़ पढ़ लैं, और तवाफ़ में पूरी तवज्जोह के साथ शामिल हों। भीड़ चाहे जितनी हो, फ़िक्र न करें। ज़ब अल्लाह के घर के फेरे शुरू करेंगे, तो जगह आप को बराबर मिलती रहेगी।

लीजिए, फ़ज की अज़ान हुई, नमाज़ से फ़ारिग़ होकर चाहे तवाफ़ या तिलावत में मशग़ूल हों या कुछ देर बाद फिर हरम शरीफ़ में ही सो जायें। घन्टा सवा घन्टा की नींद लीजिए और

उठकर अपने घर जाएं। रास्ते में हाजत ख़ाने मिलेंगे। अगर ज़रूरत महसूस करें तो फ़ारिग़ हो लें। नाश्ता कर लें, कोई ज़रूरत की चीज़ लेनी हो, ले लें। ग्यारह बजे तक यह सब निपटा लें और फिर हरम शरीफ़ की तरफ़ तेज़ी से चलिए। ज़ुहर की नमाज़ के बाद भी एक तवाफ़ मिल जाएगा। अगरचे यहाँ धूप में मताफ़ के पत्थर गर्म नहीं होते, मगर यह आपकी सहूलत पर है। घर आकर खाना खा लें और कुछ देर सो जाएं। थोड़ी देर बाद अस्र की अज़ान होगी। तेज़ी से उठें और यह याद रखें कि आपको अज़ान से पहले पहले हरम शरीफ़ पहुँच जाना है।

अगर आप ने घर बैठे अज़ान सुनी तो हरम शरीफ़ नहीं पहुँच सकेंगे और नमाज़ सड़क पर अदा करनी होगी। इसलिए फौरन चलिए।

हाजत वग़ैरा से फ़राग़त के बाद एक मज़बूत वुज़ू बना लीजिये, जो आपको इशा तक पकड़े रहना है। अस्र के बाद तवाफ़ मग़रिब बाद तवाफ़-तवाफ़ तवाफ़ इशा पढ़ लीजिए और तवाफ़ को जी चाहे तो एक हिम्मत और कर लें, या फिर घर आ जाएं, खाना खाकर सो जाएं। फिर इसी तरह रात को तीन बजे आपको उठना है।

(36) खाने का इन्तेज़ाम :

बहुत से लोग चूल्हे चौके, बर्तन हांडी साथ लाते हैं। बहनें बेचारी पकाती हैं। यह मना नहीं है, लेकिन अगर आप से हो सके तो नया तजुर्बा कर के देखिए।

अगर आप टेपरेकार्डर, रेडिओ, टी.वी. कपड़े क़ालीन, घड़ियाँ न ख़रीदें तो रक़म आप के पास अच्छी ख़ासी बचती है। चूल्हे जलाने के बजाय खजूर, ज़मज़म, अनार केले, सेब, अंगूर,

तली हुई मुर्ग़ी की एक टांग, उबले हुए अन्डे, ताज़ा तैयार रोटी, चाय वग़ैरा सब चीज़ें आपको राह चलते मिल जायेंगी।

और राह चलते हिन्दुस्तानी, पाकिस्तानी खाने के होटल भी आप को मिलेंगे जिस में उ़मदा क़िस्म का खाना मिल जाता है जो कि हमारे ज़ायक़े के मुताबिक़ होता है।

जनाबे वाला! खाने की हर चीज़, ठन्डे शरबत भी अच्छी पैकिंग में मिलते हैं। आप और अहलिया साहेबा खाने पीने की चीज़ें ज़रूरत के मुताबिक़ ख़रीदें, फिर दिन भर की छुट्टी। जेब में खजूर रख लें और खाने के बाद गुठली भी जेब में डाल लें या कूड़ा दान Dust bin कचरे का डिब्बा जहाँ मिले उसमें डाल दें। जी भर कर ज़मज़म पीजिए। छुट्टी हो गयी। कहाँ का चूल्हा चौका, धुआं धुप्पट में वक़्त बर्बाद करना। यही

वक़्त तवाफ़ में लगायें । मगर यह आपकी सेहत और मर्ज़ी पर है। हमने सिर्फ़ अपना तजुर्बा और मशवरा दिया है।

(37) बहनों पर रहम कीजिए :

हमारी बहनों के बारे में जो सहूलतें हैं वे हज के बयान के आख़िर में हम दे रहे हैं। यहाँ सिर्फ़ इतना ही बता दें कि मक्का, मदीना, मिना, अ़रफ़ात हर जगह चूल्हे जलाना और खाना पकाते रहना, इसमें वक़्त बहुत बर्बाद होता है।

आदमी थोड़ा सब्र करे और रेडियो, टेप, टी.वी. और घड़ी न ख़रीदें तो बहनों का वक़्त पकाने के बजाय इबादत में लग सकता है। सऊ़दी अरब वाले बर्तन धोना भी बन्द कर चुके हैं। नई दर्याफ़्त में खाना खाकर डिब्बा, प्लेट कचरेदान में डाल कर छुट्टी पा ली। 40 दिन

का सफ़र है, इसमें कौनसी बड़ी बात है कि आदमी खाने पकाने से अपना वक़्त बचा ले। फिर आप को मक्का मदीना हर जगह खाने पीने की ख़ालिस चीज़ें मिलती हैं। यहाँ न मिलावट है और न ही कम तोलने की बीमारी। बल्कि हर चीज़ आप को अच्छी से अच्छी और ख़ालिस मिलती है। चाहें तो दो एक दिन तर्जुबा कर के देख लें। अगर ठीक पड़े तो अल्लाह के वास्ते बहनों को हज के दिनों में पकाने की झंझट से नजात दिलायें, और अन्दाज़ा लगा लें कि सस्ता और अच्छा क्या पड़ता है?

(38) हज के अय्याम (दिन) :

चलिए, अल्लाह का शुक्र है कि हज के दिन आ गए। 8, 9, 10, 11, 12, ये ज़िलहिज्जा के पाँच दिन हैं, जिसकी तफ़सील में आप को एक एक दिन का प्रोग्राम बता देते हैं।

अल्लाह आप की भरपूर मदद फ़रमाये।

(39)हज का पहला दिन

8 ज़िलहिज्जा :

आज सात ज़िलहिज्जा है। शाम को आठ तारीख़ शुरू हो गयी और हाजीयों के क़ाफ़िले एहराम पहने हुए मिना रवाना होंगे और बाद मग़रिब आप भी नहा धो कर तैयार हों, ग़ुस्ल करें और एहराम पहन लें और सिर्फ़ पाँच दिन के सफ़र का सामान साथ लें। एक शतरंजी मुसल्ला बाल्टी, खाने पीने की सूखी चीज़ें, मिसाल के तौर पर अंजीर, बेकरी के बटर, तोस, पानी का एक थर्मास भर लें, जो कुछ आप अकेले उठा सकें इतना ही सामान रखें। बहुत सी चीज़ें आप को रास्ते में भी इन्शाअल्लाह मिल जायेंगी। एक एहराम आपने पहन लिया, और एक साथ भी रख लें। हज की निय्यत कर के एहराम पहन

लें। हरम शरीफ़ में दाख़िल हों, दो रकअ़त नमाज़ अदा करें और "लब्बैक" पुकारना शुरू कर दें। तवाफ़ कर लें, हो सके तो सफ़ा और मर्वा की सअ़ी भी कर लें, या चाहें तो जब आप 10 ज़िलहिज्जा को यहाँ आयेंगे तब कर लेना।

अगर आप ने अभी यानी 8 ज़िलहिज्जा को सअ़ी कर ली तो आप को 10 जिलहिज्जा को सिर्फ़ तवाफ़े ज़ियारत करना है। सअ़ी करना फिर इस दिन ज़रूरी नहीं। आप खुद करना चाहें तो और बात है।

तवाफ़ के बाद आप हरम शरीफ़ से बाहर आकर मुअ़ल्लिम के बताये हुए मुक़ाम पर आ जाएं। वहाँ से बस में बैठकर आप को मिना के मैदान में पड़ाव डालना है।

(40) मिना को रवानगी :

8 ज़िलहिज्जा को हज का एहराम बांधकर

मिना की जानिब कूच होगा। इस सफ़र में तल्बिया कसरत से पढ़ते रहें। इस वक़्त अल्लाह को आप के ये कलिमात बहुत पसन्द हैं। जितना ज़्यादा आप इस को पढ़ेंगे, अल्लाह की रहमत और उसका क़ुर्ब (नज़दीकी) हासिल होगा।

मुअ़ल्लिम ने आप का ख़ैमे में या जहाँ भी क़याम का इन्तेज़ाम किया है, वहाँ आप क़याम करें। यहाँ आप को ज़ुहर, अ़स्र, मग़रिब और इशा तक चार नमाज़ें और 9 ज़िलहिज्जा की फ़ज्र की नमाज़ पढ़नी है।

रसूले करीम हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने भी अ़रफ़ात जाने से पहले पाँच नमाज़ें मिना में अदा फ़रमायी थीं।

हाजियों की बड़ी भारी तादाद होने की वजह से 7 ज़िलहिज्जा को ही दिन ख़त्म हुआ और मुअ़ल्लिम लोग रात में हाजियों को मोटर

बस में सवार कर के मिना पहुँचाते हैं। इसमें भी कोई हर्ज नहीं, क्यों कि इस्लामी तारीख़ मग़रिब के वक़्त शुरू होकर दूसरे दिन मग़रिब से पहले तक मानी जाती है।

इस तरह रात में जो लोग मिना पहुँच जाते हैं, वे भी 8 ज़िलहिज्जा की रात ही होती है और दिन निकलने पर 8 ज़िलहिज्जा का दिन होगा। मिना के मैदान में यह हज करने वालों का पहला दिन होता है, अब चाहे कोई रात में पहुँच जाये या फ़ज्र की नमाज़ मक्का शरीफ़ में पढ़कर मिना के लिए रवाना हो। आम तौर पर रात भर और सुबह तक हाजीयों के काफ़ले मक्का से मिना की तरफ़ सफ़र करते हुए पहुँचते जाते हैं।

(41) 9 ज़िलहिज्जा हज का दूसरा दिन यानी अ़रफ़ात में वक़ूफ़ का दिन :

आज आपको फ़ज्र की नमाज़ मिना में अदा करने के बाद दिन चढ़े अ़रफ़ात जाना है। आज अ़रफ़े का दिन है। हज का रुक्ने अज़ीम और हज का सबसे बड़ा दिन अल्लाह ने आपको नसीब फ़रमाया, जिसके बग़ैर हज नहीं होता।

(42) अ़रफ़ात को रवानगी :

आप को मुअ़ल्लिम की तरफ़ से मोटर बस मिना से अ़रफ़ात की तरफ़ ले जायेगी अ़रफ़ात की तरफ़ जाते हुए दुआएं माँगें। अ़रफ़ात पहुँच कर अपने ख़ैमे में क़याम कीजिए। अ़रफ़ात का मैदान एक बहुत बड़ा साफ़ सुथरा चटयल मैदान है। चारों तरफ़ उस की हदों पर निशानात लगवा दिये गये हैं, ताकि वक़ूफ़ अ़रफ़ात से बाहर न हो।

अ़रफ़ात में, जिस तरफ़ से दाख़िल हों, वहाँ हज़रत इब्राहीम (अ़लै.) की क़ायम की हुई एक मस्जिद है। यही मस्जिदे नमरा है। मैदाने अ़रफ़ात में जहाँ भी जगह मिले आप ठहर जाएं। ज़वाल से पहले तौबा इस्तिग़फ़ार में मशग़ूल रहें। मस्अले की रू से आप को जुहर और अ़स्र की नमाज़ अ़रफ़ात में अदा करनी है। ज़वाल का वक़्त गुज़रते ही मस्जिदे नमरा के इमाम साहब एक अज़ान और दो तकबीरों के साथ ज़ुहर के वक़्त ही ज़ुहर और अ़स्र की नमाज़ मिलाकर पढ़ाते हैं। अगर आपको सहूलत हो. मस्जिद नमरा जायें, अ़रफ़ात में ज़ुहर और अ़स्र जमाअ़त के साथ अदा नहीं की तो फिर ज़ुहर की नमाज़ ज़ुहर के वक़्त में अ़स्र की नमाज़ अ़स्र के वक़्त में तनहा या अपनी जमाअ़त के साथ अदा कर लें।

(43) वक़ूफ़े अरफ़ात :

वक़ूफ़े अरफ़ात का वक़्त अरफ़े के दिन ज़वाले आफ़ताब के वक़्त से शुरू हो जाता है, नमाज़ से फ़ारिग़ होकर वक़ूफ़ में मसरूफ़ हो जायें, मुमकिन हो तो क़िबला रूख़ खड़े होकर मग़रिब तक वक़ूफ़ कीजिये। वक़ूफ़ के वक़्त बैठना और लेटना भी जाइज़ है। वक़ूफ़ के मअ़ना खड़े रहने के हैं। जितना ज़्यादा खड़े रह सकें अच्छा है। यह वक़्त और मुक़ाम दुआ़ओं का है। मुनाजात और तौबा इस्तिग़फ़ार की क़ुबूलियत का है। एक मिनट भी आज हाथ से न जाने दीजिए। जो मांगना हो मांग लें, मिल जाएगा।

(44) अ़रफ़ात से मुज़दल्फ़ा को रवानगीः

मिना और अ़रफ़ात के दरमियान एक बहुत बड़े मैदान में मस्जिद बनी हुई है, जिसे

मशअ़रे हराम कहते हैं। मशअ़रूल हराम (मुज़दल्फ़ा) में एक रात क़याम करना है। जब सूरज डूब जाए, तो अ़रफ़ात से मुज़दल्फ़ा रवाना हो जायें।

अ़रफ़ात से मुज़दल्फ़ा आते हुए रास्ते में कहीं भी मग़रिब की नमाज़ न पढ़ें। चाहे अ़रफ़ात से निकलने में आप को कितनी भी देर हो जाए। याद रखें मग़रिब और इशा की नमाज़ें आप को मुज़दल्फ़ा में एक साथ मिलाकर पढ़नी हैं। मुज़दल्फ़ा में सारी रात इबादत में गुज़ारना अफ़ज़ल है, लेकिन लेटना या आराम करना मना नहीं है।

फ़ज्र की नमाज़ सुबह वक़्त पर पढ़ें नमाज़ के बाद थोड़ी देर मुज़दल्फ़ा में ठहरना वाजिब है। वक़्त पर नमाज़ पढ़ने से यह वाजिब भी आसानी से पूरा हो जाता है। यहाँ मैदान में

रात ही से एक थैली या लिफ़ाफ़े में मिना में शैतान को मारने के लिए सत्तर (70) कंकरियाँ चुन कर रख लें। कुछ और कंकर भी अलग से ज़्यादा रख लें, ताकि कंकर ख़ता होने पर परेशान न होना पड़े और सूरज तुलूअ़ होते ही मुज़दल्फ़ा से मिना को रवाना हो जाएं।

(45) हज का तीसरा दिन -

10 ज़िलहिज्जा :

आज दसवीं ज़िलहिज्जा है। हज के मशाग़िल की वजह से ईदुल अज़हा की नमाज़ हाजीयों को माफ़ कर दी गई है । आज का दिन बड़ा मसरूफ़ दिन है और इस दिन हाजी को बहुत से काम अंजाम देने हैं।

(46) पहला वाजिब वक़ूफ़ मुज़दल्फ़ा :

मुज़दल्फ़ा में फ़ज की नमाज़ से फ़ारिग़ हो कर चन्द मिनट वक़ूफ़ करे और पहले की

तरह तौबा व इस्तिग़फ़ार करे और अपने गुनाहों की माफ़ी मांगे। सूरज निकलने से चन्द मिनट पहले वक़ूफ़ का वक़्त पूरा हो जाता है। अब आप मिना रवाना हो जायें। यहाँ भी मुअ़ल्लिम की बस आपको मिना ले जाने के लिए आपकी क़याम गाह के क़रीब मिलेगी। आजकल हज में बड़ी भीड़ होती है। शरीअ़त ने माज़ूरों और औरतों को सहूलत दी है, और वह 10 ज़िलहिज्जा को बाद ज़वाल और 11 व 12 ज़िलहिज्जा को रात में (रमी) कंकरियां मार सकती हैं। मर्दों को चाहिए कि वे औरतों और माज़ूरों को सहूलत के वक़्त में ले जायें। अपनी सहूलत की वजह से इन को तकलीफ़ में न डालें।

(47) जमरतुल अ़क़्बा-बड़े शैतान की रमी यानी उसे कंकर मारना :

10 ज़िलहिज्जा का सूरज तुलूअ़ हो

गया। आपको मिना की तरफ़ कूच करना है। आज सिर्फ बड़े शैतान को सात कंकरियाँ ज़वाल से पहले मारनी हैं। कंकरियाँ मारने से पहले तल्बिया पढ़ना बन्द हो जाता है। मिना में तीन जमरों पर कंकरियाँ मारी जाती हैं। इसका मक़सद यह है कि कोई हाजी हज अदा करने के दौरान या बाद में शैतान के बहकावे में न आ जावे। चुनांचे इस वाक़िये की याद ताज़ा की जाती है और कंकरियाँ मारी जाती हैं।

मिना में तीन मुक़ामात पर जमरात के निशानात मौजूद हैं। पहला जमरा, "मस्जिदे ख़ैफ़" के नज़दीक है, इसे "जमरतुल ऊला" कहते हैं। दूसरा इससे थोड़ी दूर जा कर इसी रास्ते में आता है, इस को "जमरतुल वुस्ता" (बीच वाला) कहते हैं। तीसरा जमरा मिना के आख़िर में है, इस को "जमरतुल अक़्बा" कहते

हैं। आज के दिन सिर्फ़ जमरतुल अक़्बा यानी बड़े शैतान की रमी करना है।

"जमरतुल अक़्बा" के कुछ फ़ासले पर खड़े होकर एक के बाद एक सात कंकरियाँ मारना है और हर एक कंकर पर पढ़ते जाएं:-

'बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अकबर
रजमल्लिश्शयतानि रिज़म बिर्रहमानि'

तर्जुमा - अल्लाह के नाम से शुरू जो सबसे बड़ा है। मैं शैतान पर पथराव करता हूँ, ताकि अल्लाह मुझ से राज़ी हो जाए।

(48) क़ुर्बानी :

रमी से फ़ारिग़ होकर मिना में क़ुर्बानी की जाती है। ख़याल रहे कि जब तक क़ुर्बानी न हो जाए, सर के बाल न उतारें। क़ुर्बानी के बाद बाल कटवायें या मुंडवायें।

(49) हलक़ - सर मुंडवाना :

क़ुर्बानी से फ़ारिग़ होने के बाद मर्द हाजी सर के बाल मुंडवायें या कतरावें, लेकिन सर मुंडवाना बेहतर है। औरतों के लिए सर मुंडवाना जाइज़ नहीं है। आप के साथ आपकी बीवी, बहन या वालिदा जो भी हो, थोड़े से बाल यानी बालों के आख़री सिरे से किसी एक लट में से एक इंच काट लें। बाल कटवाने के बाद एहराम खोल दें और रोज़ाना के जैसे लिबास पहन लें।

(50) हज के तीन फ़राइज़ :

(1) एहराम बांधना (2) अरफ़ात की हाज़री (3) तवाफ़े ज़ियारत। जिसमें अव्वल के दो अदा हो गये और तीसरा बाक़ी है। 10 ज़िलहिज्जा का पाँचवां और सबसे अहम काम।

(51) तवाफ़े ज़ियारत :

यह भी अरकाने हज में से है। रमी करने के बाद और क़ुर्बानी करने व एहराम खोलकर नहा लेने के बाद तवाफ़े ज़ियारत करना चाहिए।

ख़याल रहे, तवाफ़े ज़ियारत अपने रोज़ाना के कपड़ों में किया जा सकता है। तवाफ़े ज़ियारत का अफ़ज़ल वक़्त आज ही यानी 10 ज़िलहिज्जा है, अगर किसी वजह से न कर सके तो बारहवीं ज़िलहिज्जा को सूरज डूबने से पहले पहले कर लेना चाहिए।

(52) तवाफ़े ज़ियारत के बाद सफ़ा व मर्वा के दरमियान सअ़ी (दौड़ लगाना) :

तवाफ़े ज़ियारत के बाद आप सफ़ा व मर्वा के दरमियान सअ़ी बग़ैर एहराम के अपने कपड़ों में करेंगे, क्यों कि एहराम इस से पहले

ख़त्म हो जाता है।

अलहम्दु लिल्लाह! 10 ज़िलहिज्जा के आप के सारे काम अंजाम पा गये। अल्लाह का शुक्र अदा कीजिए कि उसने आप को इतनी बड़ी ख़ुशी अता की कि अपने घर बुलाया और अपने दर को छूने का अनमोल मौक़ा दिया। अ़रफ़ात में क़याम की फ़ज़ीलत से नवाज़ा। अब आप एहराम की पाबन्दियों से आज़ाद हो गये। अब आप मक्का में न रूकें, बल्कि फ़ौरन फिर मिना चले जायें। तवाफ़े ज़ियारत के बाद दो दिन दो रात मिना में क़याम अभी और करना है।

(53) हज का चौथा दिन - 11 ज़िलहिज्जा :-

अगर आप ज़्यादा भीड़ होने की वजह से 10 तारीख़ को क़ुर्बानी या तवाफ़े ज़ियारत

नहीं कर सके, तो आज कर लें और बेहतर है ज़ुहर से पहले फ़ारिग़ हो जायें।

(54) रमी : (क़ंकरियाँ मारना)

आज के दिन यानी 11 ज़िलहिज्जा को तीन जमरों की रमी करना है। ज़ुहर की नमाज़ के बाद रमी के लिए निकल जाएं। आज रमी का वक़्त ज़वाले आफ़ताब से शुरू हो कर ग़ुरूबे आफ़ताब तक है। ग़ुरूबे आफ़ताब के बाद मकरूह है। रास्ते में सबसे पहले "जमरतुल ऊला" है। इसको सात कंकरियाँ मारे और हर कंकरी के साथ पढ़े-

बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अकबर
रजमल्लिश्शयतानि रिज़म बिर्रहमानि.

तर्जुमा - अल्लाह का नाम लेकर, जो सब से बड़ा है। मैं शैतान को पत्थर मारता हूँ और रहमान की रज़ा चाहता हूँ।

इसके बाद ''जमरतुल वुस्ता'' (बीच वाले) पर आ जाए, और इसी तरह सात कंकरियाँ इस को भी मारें। फिर ''जमरतुल अक्बा'' यानी आख़िर वाले पर आयें, सात कंकरीयां उसको भी मारे, बस आज आपने तीनों शैतानों को कंकर मारकर ज़लील किया। बाक़ी वक़्त इबादत ज़िक्र व अज़कार में गुज़ारें।

(55) हज का पाँचवाँ दिन - 12 ज़िलहिज्जा :

अगर आपने क़ुर्बानी या तवाफ़े ज़ियारत 11 ज़िलहिज्जा को भी नहीं किया, तो आज कर सकते हैं। आज का ख़ास काम तीनों जमरात की ज़वाल के बाद रमी करना है। बिल्कुल उसी तरतीब और तरीक़े से, जिस तरह आप कल कर चुके हैं।

11 और 12 ज़िलहिज्जा को रमी का

वक़्त ज़वाल के बाद शुरू होता है, इसलिए ज़वाल से सूरज के डूबने तक तीनों शैतानों को कंकर मार कर फ़ारिग़ हो जाएं।

भीड़ भाड़ की वजह से अगर आप रमी न कर सके तो मग़रिब के बाद सुबह सादिक़ से पहले तक जाइज़ है। बारहवीं तारीख़ को रमी के बाद तेरहवीं तारीख़ की रमी के लिए मिना में और क़याम करने या न करने का आप को इख़्तियार है। आप चाहें तो आज रमी से फ़ारिग़ होकर मक्का शरीफ़ जा सकते हैं। बशर्ते कि सूरज डूबने से पहले आप मिना से निकल जायें। लेकिन अगर 12 ज़िलहिज्जा को सूरज डूबने से पहले आप मिना से न निकल सके तो अब मिना से जाना मकरूह है। अब रात मिना ही में गुज़ारें और 13 तारीख़ को ज़वाल के बाद रमी कर के मक्का शरीफ़ पहुंच जायें।

(56) तवाफ़े विदाअ़ :

बाहर से आनेवालों पर वाजिब है कि मक्का शरीफ़ से रूख़सत होकर जब अपने वतन जाने लगें तो रूख़सती तवाफ़ करें। यह हज का आख़री वाजिब है। आप का हज "हज्जे इफ़राद" हो या "हज्जे क़िरान" या "हज्जे तमत्तुअ़"। हर सूरत में तवाफ़े विदा करने के बाद आप मक्का शरीफ़ से अपने वतन या जहाँ जाना चाहें, जा सकते हैं।

अलहम्दु लिल्लाह! आप हज कर चुके हैं। आप हज के बाद मक्का से वतन वापस हों, तो तवाफ़े विदा करने के बाद ही मक्का से रवाना हो सकते हैं।

अगर आप हज के बाद मदीना शरीफ़ जाने का फ़ैसला कर चुके हैं, तो याद रखें कि मदीना शरीफ़ की ज़ियारत के बाद आप को

जद्दा आकर वापस लौटना होगा। ऐसी सूरत में भी आप मक्का से विदा होते वक़्त तवाफ़े विदा कर लें।

तवाफ़े विदा के लिए बेहतर तरीक़ा यह है कि सामान अस्बाब सब बांधकर तैयार कर लिया जाए और सिर्फ़ रवाना होना बाक़ी रह जाए।

तवाफ़े विदा के बाद में मक्का मुकर्रमा छोड़कर फ़ौरन सफ़र इख़्तियार करना चाहिए। तवाफ़े विदा के साथ सओ़ी ज़रूरी नहीं है।

(57) चन्द मालूमात :

सफ़ा व मर्वा की सओ़ी तवाफ़े उमरा और तवाफ़े ज़ियारत के बाद होती है, और हाँ, तवाफ़े क़ुदूम के बाद कोई शख़्स हज की सओ़ी करना चाहे तो कर सकता है, फिर ऐसे शख़्स पर तवाफ़े ज़ियारत के बाद सओ़ी करना ज़रूरी

नहीं।

यह याद रहे कि तवाफ़े उमरा और तवाफ़े क़ुदूम एहराम के बग़ैर नहीं किया जा सकता, बाक़ी नफ़ली तवाफ़ में एहराम की ज़रूरत नहीं।

1) तवाफ़े उमरा - तवाफ़े उमरा उसे कहते हैं कि उमरा की निय्यत वाला मस्जिदे हराम में दाख़िल हो और सब से पहले तवाफ़ करे। यह हुआ तवाफ़े उमरा।

2) तवाफ़े क़ुदूम - 8 ज़िलहिज्जा को जो शख़्स एहराम बाधकर हरम शरीफ़ में आवे और तवाफ़ करे, उसे तवाफ़े क़ुदूम कहते हैं।

3) तवाफ़े नफ़्ल - यह दिन रात 24 घन्टे में कभी भी किया जा सकता है। नमाज़ के चन्द औक़ात की तरह तवाफ़ का कोई मुक़र्रर वक़्त नहीं होता।

(58) ज़ियारते मदीना तय्यबा :

अल्लाह तआला ने आप को उमरे और हज के लिए "अर्दुल क़ुरआन" (यानी जहाँ क़ुरआन नाज़िल हुआ उस धरती) में हाज़री का शर्फ़ अता फ़रमाया। अब आप को मदीना शरीफ़ जाना है। हुज़ूर अक़्दस, साहिबे क़ुरआन हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मस्जिदे नबवी और आप (स.) के रौज़-ए-मुबारक की ज़ियारत के लिए आपको सफ़र करना है।

(59) हज से पहले या हज के बाद :

आपको अपने सफ़र के हालात के तहत मदीना शरीफ़ की ज़ियारत का फ़ैसला करना है, कि आप का मदीना शरीफ़ का सफ़र हज से पहले होगा या बाद में। हम दोनों सूरतों के सफ़र की तरतीब आपको बता देते हैं।

(60) मक्का मुकर्रमा पहुँचते ही फ़ैसला कर लें :

आप ने मक्का शरीफ़ पहुँच कर उमरा कर लिया।

फिर मोअल्लिम से मशवरा कर लें कि हज से पहले मस्जिदे नबवी में क़ब्रे रसूले पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ज़ियारत का सफ़र किस तरह से शुरू करें।

(61) बस या कार :

आप मोअ़ल्लिम को छोड़ कर अलग से मदीना जाने का प्रोग्राम हरगिज़ न बनाएं। सहूलत और राहत इसी में है।

मोअ़ल्लिम आप को बता देगा कि आप को किस वक़्त मदीने के लिए निकलना है। उस वक़्त आप तैयार रहें मोअ़ल्लिम का आदमी ख़ुद

आकर आप को बस में सवार करा देगा। यह पूरी की पूरी बस मदीना ही जाने वाली होगी। और मदीने में यह बस सीधी आप को अपनी क़यामगाह पर ही छोड़ेगी।

(62) सफ़र का सामान :

आप को मदीना शरीफ़ में सिर्फ़ आठ दिन के क़याम की हुकूमत इजाज़त देगी, ताकि आप 40 नमाज़ें मस्जिदे नबवी में अदा कर सकें। यूँ तो कभी कभार ज़्यादा वक़्त भी दिया जाता है। लेकिन लाखों हाजियों को मदीना तय्यबा की ज़ियारत के लिए लाने, ले जाने में ज़ाइरीन को तकलीफ़ न हो इसलिए 40 नमाज़ों के बाद अक्सर लोगों का हज से पहले मदीने से रवाना हो जाना ज़रूरी होता है।

हदीस शरीफ़ में भी मस्जिदे नबवी में 40 नमाज़ें अदा करने की फ़ज़ीलत बताई गयी

है। आप अपना सामान दस दिन के सफ़र के हिसाब से साथ रख लें।

(63) मदीना शरीफ़ से वापसी का एहराम साथ रखें :

मक्का शरीफ़ में उमरा करने के बाद और हज से पहले अगर आप ने मदीना शरीफ़ की ज़ियारत का फ़ैसला कर लिया है तो इस सफ़र में एहराम साथ रखना भी ज़रूरी है, ताकि जब आप मदीना शरीफ़ से वापस मक्का शरीफ़ आयें तो एहराम बाँध कर ही वापसी का सफ़र होगा और मक्का शरीफ़ आ कर वैसा ही उमरा आपको करना पड़ेगा, जैसा आप जहा से मक्का जाकर उमरा कर चुके थे।

(64) मदीना मुनव्वरा की हाज़री :

आप दरूद शरीफ़ का कसरत से विर्द करते हुए मदीना तय्यबा की जानिब चलें। जब

आप की बस मदीना मुनव्वरा पहुँचने को होगी, दूर से हुज़ूरे पाक (स.) की मस्जिद के मिनारे नज़र आयेंगे और गुंबदे ख़िज़रा की आप को ज़ियारत नसीब होगी। दरूद शरीफ़ की कसरत जारी रखें।

(65) मदीना का क़याम :

मदीना शरीफ़ में आप को आठ या दस दिन तय शुदा जगह क़याम करना है। यहाँ भी आपको टाइम टेबल, वक़्त के नज़्म की वही तरतीब क़ायम करनी है, जो आप मक्का शरीफ़ में क़ायम कर चुके हैं। यानी रात को तीन बजे उठकर मस्जिदे नबवी पहुँच जायें।

तहज्जुद की नमाज़ हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम के मुसल्ले के जितना करीब हो सके अदा करें। बाद नमाज़े फ़ज्र सो जाएं आठ बजे मस्जिद से बाहर निकल कर चाय पानी के बाद

दोपहर के लिए इन्तेज़ाम में रहें। ग्यारह बजे फिर जुहर के लिए मस्जिद में दाख़िल हों। वापसी पर दोपहर का खाना खा कर कुछ देर लेट जायें, फिर तीन बजे तैयार होकर मस्जिद में दाख़िल हों तो अस्र और मग़रिब और इशा एक ही वुज़ू से पढ़ने की कोशिश करें। ऐसा करने से इन्शाअल्लाह रौज़-ए-मुबारक पर बार बार सलाम पढ़ने का मौक़ा मिलेगा और "रियाज़ुल जन्नत" में नमाज़ की अदायगी और नफ़्ल व तिलावत की ख़ूब लज़्ज़त और ईमानी मिठास मिलेगी।

(66) चौकन्ने रहिए :

यहाँ भी हमारे मुल्क भारत के बहुत से नादान लोग ख़ुफ़िया प्रचार करते हैं कि मदीना तय्यबा की मस्जिदों के इमाम साहेबान वहाबी और काफ़िर हैं। इन के पीछे नमाज़ पढ़ना मना

है। ईमान के ऐसे डाकुओं को मुँह न लगायें। हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम के मुसल्ले मुबारक पर अल्लाह तआला अपने उसी बन्दे को इमामत की तौफ़ीक़ अता फ़रमाता है, जो उसकी बारगाह में मक़बूल हो।

यहाँ पर भी मक्का मुकर्रमा की तरह कई कई इमाम होते हैं। बारी बारी नमाज़ पढ़ाते हैं। उन को बुरा कहना, यहाँ तक कि उनको काफ़िर कहने में भी हमारे यहाँ के ख़बीस और पलीद आदमी बाज़ नहीं आते। उन्हें ख़ुदा का ख़ौफ़ नहीं। रसूल (स.) की अज़्मत का पास नहीं। उनको अपने मुल्क में बुज़ुर्गाने दीन और अल्लाह के नेक बन्दों की क़ब्रों पर ढोलक बाजा, मंजीरा, फूल चादर, गागर शिरनी, क़व्वाली घुंगरू तबला सारंगी, नाच गाने की आदत पड़ी है और ये तमाम ख़ुराफ़ात यहाँ हुज़ूर अक़्दस

सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के रौज़-ए-मुबारक पर नहीं होती, इसलिए बहरूपीये बिगड़ उठते हैं। उनकी बातों में आकर जो कोई मस्जिदे नबवी (स.) में जमाअ़त की नमाज़ छोड़ेगा, वह ख़ातमुल मुर्सलीन, सय्यदुल अंबिया हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की नाराज़ी मोल लेगा कि मेरी मस्जिद में भी यह आदमी मेरी उम्मत में फूट और इख़्तिलाफ़ डालने आया।

तौबा तौबा! किसी भी मुसलमान को ऐसी हरकत से दूर रहना चाहिए।

(67) इत्र की मुमानअ़त (मनाई) :

चन्द लोग कहते हैं कि इत्र भी नहीं लगाने देते? ज़रा सोचिये, जब आप हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की मस्जिद शरीफ़ में हाज़िर होंगे और रौज़-ए-अतहर पर दरूद

शरीफ़ पढ़ने का आप को अल्लाह मौक़ा अ़ता फ़रमायेगा, तो आप देखेंगे कि लाखों लाख शम्अ़े नबुव्वत के परवाने सारी दुनिया से खिंच खिंच कर चले आते हैं, चलते चलते दरूद व सलाम पढ़कर रौज़-ए-पाक से गुज़रते हैं। यहां पर कोई इत्र की शीशी फेंके तो क्या बे अदबी न होगी? और शीशी टूटने पर हाजियों के पांव ज़ख़्मी न हो जायेंगे?

मस्जिदे नबवी में ये सब करने की कोई गुंजाइश नहीं और ऐसा करना हम को मना है। बाक़ी हुज़ूर मोहतरम नबी-ए-मुकर्रम अहमदे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के रौज़-ए-अतहर से जो खुशबू आती है, वह लाखों लाख इत्रदान से भी ज़्यादा सदा बहार जन्नत की फुलवारी की ख़ुशबू है। उसे महसूस कीजिये, तो आप को मालूम होगा कि सय्यदे आलम

सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की क़ब्र मुबारक की ज़ियारत में दिल व दिमाग़ की क्या कैफ़ियत होती है।

रहे वे लोग, जिनको ईमान की नाक नहीं, ऐसे नकटों को जन्नत की खुशबू भला कैसे नसीब होगी?

(68) चालीस नमाज़ें :

यहां चालीस नमाज़ें पढ़ने की कोशिश करना चाहिए। अव्वल वक़्त में जायेंगे तो मस्जिद में दाख़िल हो सकेंगे वरना सड़क पर नमाज़ पढ़नी होगी।

आप को मदीने में गिन कर चालीस (40) नमाज़ों का ही वक़्त मिलेगा इसलिए बहुत ही पाबंदी से आप इन आठ 8 दिनों में अपनी चालीस नमाज़ें पूरी कर लें। क्यों कि मोअ़ल्लिम के एजेन्ट के पास आप की मक्का वापसी की

तारीख़ तय है वह आप को दो तीन रोज़ पहले ही बता देगा कि आप फ़लाँ तारीख़ को मक्का वापसी के लिए तैयार रहें। आप का पासपोर्ट यहाँ भी मोअ़ल्लिम के पास रहेगा। वह आपके मक्का शरीफ़ जाने का इन्तेज़ाम कर देगा।

मदीना मुनव्वरा से खजूरें लाना न भूलिएगा। अल्लाह की बड़ी नेअ़मत है। सफ़रे हज से आप को ज़म ज़म और खजूर के तोहफ़े लाना हैं। बाक़ी किसी और ख़रीदारी में न पड़िये।

बस रज़ा-ए-इलाही में तवाफ़ मिल जाए और मुहब्बते रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम में दरूद व सलाम आपके नाम-ए-आमाल में दर्ज हों। सुबहानल्लाह ! सुबहानल्लाह !

(69) सलात व सलाम :

अल्लाहुम्मा सल्लिअ़ला मुहम्मदिन अ़ब्दिका व रसूलिकन्नबिय्यिल उम्मिय्यी.

अस्सलातु वस्सलामु

अ़ला मन नुज़्ज़िला अ़ला क़ल्बिही किताबुल्लाह

अस्सलातु वस्सलामु

अ़ला ख़ातमिन नबिय्यीन

अस्सलातु वस्सलामु

अ़ला रहमतिल लिल् आ़लमीन

अस्सलातु वस्सलामु

अ़ला मन दआ़ना इलल्लाह

अस्सलातु वस्सलामु

अ़ला मन क़ामा दीनल्लाह

अस्सलातु वस्सलामु

अ़ला सय्यिदिस सिद्दीक़ीन

अस्सलातु वस्सलामु

अ़ला सय्यिदिश शुहदा इ वस्सालिहीन

अस्सलातु वस्सलामु

अ़ला शाहिदींव व मुबश्शिरिंव व नज़ीर

अस्सलातु वस्सलामु

अ़ला दाअ़िन इलल्लाहि बिइज़निही व सिराजिम मुनीर

अस्सलातु वस्सलामु

अ़ला मन जाअ बिल्हुदा

अस्सलातु वस्सलामु

अ़ला मन जाअ बिल कुर्आन

अस्सलातु वस्सलामु

अ़ला मन इस्मुहू मक्तूबुन फ़ित्तौराति वल इंजील

अस्सलातु वस्सलामु

अ़ला मन हदाना इला तरीक़िम मुस्तक़ीम

अस्सलातु वस्सलामु

अ़ला मन ला नबिय्या बअद हू

(70) मदीना तय्यबा से रवानगी :

जब मदीना तय्यबा से रवानगी का वक़्त हो जाये, अपना सामान बांध लें और ग़ुस्ल से फ़ारिग़ होकर उमरे का एहराम बांध लें। यह एहराम ठीक उसी तरह का होगा, जैसे आप ने बम्बई से (या जिस जगह से अपना सफ़र शुरू किया था) बान्धा था और मक्का मोअज़्ज़मा जाकर आप ने जिस तरह अरकान पूरे किये थे, अब फिर आप को एक उमरा करना है, जिसका एहराम मदीना तय्यबा वाली मीक़ात "ज़ुल हुलैफ़ा" से बान्धा जाता है।

ज़ुलहुलैफ़ा मदीना मुनव्वरा से 10 किलो मीटर है, लेकिन अच्छा हो कि आप मदीना मुनव्वरा से एहराम बांध लें। इसी में आसानी है।

हुज़ूर अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम के रौज़-ए-पाक पर सलाम पढ़े और बस पर सवार

हो जाये।

(71) ज़ुल हुलैफ़ा (मदीने से मक्का जाने के लिए एहराम बांधने की जगह) :

आधे घन्टे बाद बस आपको "ज़ुल हुलैफ़ा" पहुँचा देगी। लोग वहाँ ग़ुस्ल कर के एहराम बांधेंगे। आप ने मदीना शरीफ़ से एहराम बांध लिया है, तो फिर आप तैयार हैं। अगर मदीना से एहराम न बांधा हो तो "ज़ुल हुलैफ़ा" में ग़ुस्ल करके एहराम बांध कर बस में सवार हो जायें।

अलहम्दु लिल्लाह! मदीना तय्यबा और ज़ुल हुलैफ़ा में भी ग़ुसलखाने, वुज़ूख़ाने, पाख़ाने भारी संख्या में हर जगह मौजूद हैं। आपको किसी भी जगह तकलीफ़ का सामना नहीं करना पड़ेगा।

अब आपको मक्का शरीफ़ का सफ़र करना है। तल्बिया पढ़ते जायें और अल्लाह का नाम लेते हुए मक्का शरीफ़ पहुँच जायें।

(72) मक्का शरीफ़ में आपका दाख़िला :

मक्का शरीफ़ में आप का दाख़िला हुआ। तवाफ़ करें, सऔ़ी करें, हलक़ करें और एहराम से फ़ारिग़ होकर हज के दिन का इन्तेज़ार करें। मदीना तय्यबा के सफ़र की यह सूरत हज के पहले की हुई।

अगर आप का हज के बाद मदीना शरीफ़ की ज़ियारत को जाना होता है, तो फिर मदीना से जद्दा वापस होते वक़्त आपको मदीना में ज़ुल हुलैफ़ा से एहराम बांधने की ज़रूरत नहीं। इस लिए कि आप ज़ियारते क़ब्रे रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के बाद मक्का शरीफ़

नहीं जा रहे हैं, बल्कि हज और ज़ियारते मदीना के बाद अपने वतन वापस जा रहे हैं।

(73)हज के बाद मदीना तय्यबा का सफ़र :

हमने ज़ियारते मदीना की इस तरतीब का ज़िक्र किया है, जिस में आप का हज से पहले मदीना आने का फ़ैसला हो चुका था। लेकिन अगर आप का हज पूरा करने के बाद मदीना शरीफ़ जाना होता है तो फिर अपना तमाम सामान अस्बाब मक्का शरीफ़ से मुकम्मल तौर पर बांध कर साथ ले लें और मदीना तय्यबा जाकर वहाँ ज़ियारत पूरी करने के बाद जद्दा आ जायें।

इसमें फ़र्क़ सिर्फ़ इतना है कि अगर हज के पहले मदीना शरीफ़ जाने का फ़ैसला हो तो दस दिन की ज़रूरत का सामान साथ लें, बाक़ी

सामान मक्का में पड़ा रहने दें, इसलिए कि ज़ियारते मदीना के बाद फिर आप को मक्का आना ही है, लेकिन हज के बाद मदीना जाने के फ़ैसले पर आप को अपना तमाम सामान साथ लेकर मदीना तय्यबा होते हुए वतन वापसी का सफ़र इख़्तियार करना है।

(74) बहनों के लिए हज के ख़ास ख़ास मसाइल (हुकुम) :

जब एहराम बांधने का इरादा करें तो ग़ुस्ल कर लें। माहवारी के दिन हों तब भी ग़ुस्ल करें, क्यों कि यह ग़ुस्ल बदन की सफ़ाई के लिए और मैल कुचैल दूर करने के लिए है।

औरत पाक साफ़ सिले हुए कपड़े का एहराम बाध सकती है। कपड़े ज़्यादा गहरे रंगीन न हों। औरत अपने एहराम का कपड़ा सूती या रेशमी जैसा भी चाहे इस्तेमाल कर सकती है

मर्दाना ढंग के कपड़े न हों और इतने बारीक पतले न हों कि बदन झलक कर दिखाई दे।

(75) माहवारी में एहराम :

एहराम बांधते वक़्त अगर माहवारी के दिन आ जायें, तो बहनों को घबराना नहीं चाहिए और अफ़सोस नहीं करना चाहिए। ग़ुस्ल अगर न कर सकें तो वुज़ू कर के क़िबला रूख़ बैठ कर तल्बिया पढ़ना शुरू करें।

मगर हाँ, ऐसी हालत में नमाज़ नहीं पढ़ी जा सकती। माहवारी जारी होन की हालत में भी एहराम बांधा जा सकता है। इस हालत में हज के दीगर अहकाम भी अदा किये जा सकते हैं। मिसाल के तौर पर एहराम बांधना, मिना में हाज़िर होना, अ़रफ़ात के मैदान में अ़र्फ़ा के दिन वक़ूफ़ करना (खड़े रहना) मशअ़रे हराम यानी मुज़दल्फ़ा मे आना, मिना में आकर शैतान को

कंकर मारना।

माहवारी वाली ख़ातून को ये सब काम करने की इजाज़त है। अलबत्ता हैज़ की हालत में औरत तवाफ़ नहीं कर सकती और नमाज़ भी नहीं पढ़ सकती।

(76)एहराम में चेहरा ढांकना मना है :

औरत को एहराम की हालत में अपना चेहरा ढांकना मना है। नक़ाब वग़ैरा डाला जाये तो इस बात का सख़्त ख़याल रखा जाये कि कपड़ा चेहरे पर न लगने पाये।

अगर कोई ख़ातून बहुत ज़्यादा एहतिमाम रखने वाली हो तो उसे पंखे का सायबान साथ में रखना चाहिए, लेकिन ऐसा करना भी ज़रूरी नहीं है।

जब चेहरा खुला रखने की इजाज़त है,

तो वैसा ही करना दुरूस्त है।

(77) सख़्त परहेज़ :

एहराम की हालत में मियाँ बीवी को सोहबत से सख़्त परहेज़ करना चाहिए। ऐसा करने से हज और उमरा फ़ासिद हो जाता है।

(78) औरत को दुआ की इजाज़त :

हैज़ और निफ़ास की हालत में भी औरत अरफ़ात में वकूफ़ कर सकती है, सिर्फ़ नमाज़ न पढ़े और कुरआन को न छुए। बाकी क़ुरआन मजीद में आई हुई आयात जो दुआ की आयात हैं। वे ज़बानी पढ़ सकती है। वकूफ़ के वक़्त मैदाने अरफ़ात में क़िबला रूख़ हैज़ वाली औरत दुआ के लिए खड़ी हो सकती है।

(79) दरवाज़े पर खड़ी हो :

औरतें अगर हैज़ की हालत में हों, और साथ जाने वालों का सफ़र का इन्तेज़ाम बन

गया हो, तो ऐसी औरतों पर तवाफ़े विदा वाजिब नहीं।

अलबत्ता मस्जिदे हराम के किसी भी दरवाज़े से खड़ी होकर दुआ करे और काबा शरीफ़ को देख कर रुख़सत हो जाये।

(80) बहनों के लिए सहूलत :

अगर तवाफ़ पूरा करने के बाद सअी करने से पहले माहवारी जारी हो जाए तो फिर सअी तवाफ़े ज़ियारत के बाद करना चाहिए।

अगर 10 ज़िलहिज्जा को बड़े शैतान को कंकर मार लिया और हैज़ आ गया तो उस से पाक हो कर 12 ज़िलहिज्जा के बाद तवाफ़े ज़ियारत और सअी कर सकती है।

यह याद रखना चाहिए कि अगर तवाफ़े ज़ियारत के बाद माहवारी शुरू हो जाये तो उसी हालत में सअी करें, ताकि सअी तवाफ़ के साथ

ही हो जाये।

अगर तवाफ़े ज़ियारत के बाद माहवारी के दिन शुरू हो जायें और हुकूमत के क़ानून के तहत इतना वक़्त नहीं है कि पाक होने तक रूक सके तो ऐसी हालत में बग़ैर तवाफ़े विदा के अपने वतन जा सकती है।

शरीअ़ते इस्लामिया ने बहनों के मसाइल में बहुत सी सहूलतें अ़ता की हैं।

हैज़ और निफ़ास के खून के अलावा एक और ख़ून भी आता है, जिसे "इस्तिहाज़ा" कहा जाता है। ऐसी औरत वुज़ू करके लंगोट बांध ले, फिर पाक औरतों की तरह तवाफ़ कर सकती है और नमाज़ भी पढ़ सकती है। मुस्तहाज़ा औरत को नमाज़ माफ़ नहीं है।

सफ़ा व मर्वा की सअ़ी के लिए माहवारी के दिनों में औ़रत को इजाज़त है। हाँ, वह ऐसी

हालत में तवाफ़ नहीं कर सकती और नमाज़ भी नहीं पढ़ सकती, और मस्जिदे हराम में दाख़िल नहीं हो सकती।

जिन के मसलक में यह बात सही न हो वे अपने मसलक के मुताबिक़ अमल करें। कुछ उलमा के नज़दीक सफ़ा व मर्वा की जगह मस्जिदे हराम से बाहर मानी जाती है। इन के क़ौल से मालूम होता है कि सफ़ा व मर्वा की जगह पर बाहर के दरवाज़े से आ कर हैज़ वाली औरत सओ़ी कर सकती है, और वहाँ से काबा शरीफ़ को देखती, तकती रहे, और दुआ़ वग़ैरा कर सकती है।

उ़मरे का तवाफ़ शुरू करने के फ़ौरन बाद अगर माहवारी शुरू हो जाये तो बहनों को तवाफ़ बन्द कर के मस्जिदे हराम से बाहर आ जाना चाहिए। पाक होने के बाद ही तवाफ़

करना चाहिए।

(81) एक सवाल और उसका जवाबः

सवाल - आज कल माहवारी (हैज़) को रोकने के लिए गोलियाँ ईजाद हो चुकी हैं। बाज़ औरतें हज के दिनों में इसका इस्तेमाल करती हैं, ताकि हज के अरकान अदा कर सकें, तो इस निय्यत से इन गोलियों का इस्तेमाल जाइज़ है या नहीं?

इस सवाल का जवाब फ़तावा रहीमिया जिल्द नं.6 सफ़ा नं. 404 पर इस तरह दिया गया है। "माहवारी हैज़ फ़ितरी चीज़ है। इसके रोकने से सेहत पर बुरा असर पड़ने का अन्देशा है। हज में ऐसी गोलियाँ इस्तेमाल न करना चाहिए। अय्यामे हैज़ में औरत तवाफ़े ज़ियारत के सिवा तमाम अफ़आल अदा कर सकती है और हैज़ से पाक होने के बाद तवाफ़े ज़ियारत

भी कर सकती है।"

अलबत्ता अगर वक़्त कम हो और तवाफ़े ज़ियारत का वक़्त न मिल सकता हो और बावजूद कोशिश के हुकूमत से मोहलत मिलने का इमकान न हो तो इन गोलियों के इस्तेमाल की गुंजाइश है।

(देखिए फ़तावा रहीमिया जिल्द 6 सफ़ा – 404 हज़रत मुफ़्ती अब्दुल रहीम लाजपूरी साहब दामत बरकातुहुम)

(82) तीन तरह का ख़ून :

उलमाए केराम के बताने से यह मालूम होता है कि हाइज़ा औरत अगर मक्का शरीफ़ की आबादी से निकलने से पहले पाक हो जाये तो उस को लौट कर तवाफ़े विदा करना वाजिब है और अगर आबादी से निकलने के बाद पाक हो तो वाजिब नहीं है।

मालूम हुआ कि आज के दौर में हवाई सफ़र में 400 या 450 हाजी लोग इकट्ठे मक्का शरीफ़ से एक जहाज़ के लिए जद्दा रवाना होते हैं। इस में कोई औरत हाइज़ा हो और रास्ते में पाक हो जाये, तब भी उस के लिए क़ाफिला वालों को छोड़ कर अकेले वापस आना मुमकिन नहीं। लिहाज़ा यह समझना चाहिए कि औरत कों माहवारी की हालत में रूख़सत और आसानी है। औरतों को तीन तरह का ख़ून आता है--

1) हैज़ 2) इस्तिहाज़ा
3) निफ़ास

इन तीनों क़िस्मों में इस्तिहाज़ा वाले ख़ून की हालत में औरत अच्छी तरह कस कर कपड़े बांध कर हज के तमाम अरकान बिला ख़ौफ़ अदा कर सकती है।

तवाफ़े उमरा, तवाफ़े कुदूम, तवाफ़े ज़ियारत, तवाफ़े विदा, नफ़ली तवाफ़ और सफ़ा व मर्वा की दौड़ यानी हज और उमरा का हर एक रूक्न इस्तिहाज़ा वाली औरत अदा कर सकती है। इसलिए हम हैज़, इस्तिहाज़ा, निफ़ास के अहकाम सादे अल्फ़ाज़ में अलग अलग बयान करते हैं। बहनें ग़ौर से पढ़कर समझ लें।

(83) हैज़ :

औरतों को क़ुदरती तौर पर हर माह ख़ून आता है, उसे माहवारी या हैज़ कहते हैं। हैज़ की मुद्दत कम से कम तीन दिन, तीन रात है और ज़्यादा से ज़्यादा दस दिन दस रात है। हैज़ वाली औरत को नमाज़ माफ़ है। अलबत्ता रोज़ा क़ज़ा करना होगा।

अगर खून तीन दिन तीन रात से कम आवे तो हैज़ नहीं, इस्तिहाज़ा है और दस दिन

दस रात से ज़्यादा आने वाला ख़ून इस्तिहाज़ा का है। और जिस औरत की मख़्सूस आदत बन गयी हो तो इस आदत से ज़्यादा के दिन का ख़ून इस्तिहाज़ा का है।

(84) आदते हैज़ की मिसाल :

जिस औरत को अन्दाज़ा हो जाये कि उसे हैज़ अक्सर छे दिन ही आता है, तो वह इस आदत के मुताबिक़ हिसाब लगा ले कि छे दिन हैज़ के हुए और बाक़ी चार दिन इस्तिहाज़ा के हुए। यह भी याद रखे कि अगर ऐसी औरत को खून पंद्रह (15) दिन जारी रहा, तो आदत के छे दिन हैज़ के और बाक़ी नौ (9) दिन इस्तिहाज़ा के माने जायेंगे।

(85) इस्तिहाज़ा :

जो ख़ून किसी औरत को तीन दिन तीन रात से कम आवे या दस दिन दस रातों से

ज़्यादा यानी अगर किसी औरत को पंद्रह दिन तक ख़ून आता रहा तो दस दिन दस रात तो हैज़ के हुए, बाक़ी पांच दिन पांच रातें इस्तिहाज़ा के हुए। इस्तिहाज़ा के इन पाँच दिन पाँच रातों की उसे नमाज़ पढ़नी होगी। इस्तिहाज़ा की मिसाल ऐसी है, जैसे किसी की नाक नक्सीर फूट जावे या कहीं ज़ख़्म लगने से ख़ून बहता हो, इस में वुज़ू टूट जाता है। वुज़ू बना लिया जाये और नमाज़ अदा की जाये। इसी तरह अगर किसी औरत को हमल हो और दौराने हज ख़ून आ जाये तो यह भी इस्तिहाज़ा है।

इस्तिहाज़ा वाली औरत उमरे वाला तवाफ़े बैतुल्लाह कर सकती है और सफ़ा व मर्वा की सओ़ी और तवाफ़े क़ुदूम, तवाफ़े ज़ियारत और तवाफ़े विदा भी कर सकती है। इस्तिहाज़ा वाली औरत पाक है।

(86) निफ़ास :

बच्चे की विलादत के बाद जो ख़ून आता है वह निफ़ास का ख़ून है। इसकी कम से कम मुद्दत एक दिन भी हो सकती है और ज़्यादा से ज़्यादा मुद्दत चालीस दिन रात है। अगर किसी औरत का ख़ून ज़चकी के बाद सिर्फ़ एक दिन रात में बन्द हो गया तो वह निफ़ास के हुक्म से बाहर आ गयी और पाक है। निफ़ास वाली औरत को नमाज़ माफ़ है, अलबत्ता रोज़ा क़ज़ा रखना होगा।

(87) निफ़ास की आदत :

जिस औरत को एक दो ज़चकी से ये मालूम हो जाये कि उसे बच्चे की पैदाइश के बाद पच्चीस दिन तक ही ख़ून आता है तो ऐ\ औरत ने यह हिसाब लगा लेना चाहिए कि पच्चीस दिन निफ़ास के हुए बाक़ी जब तक ख़ून

आवे, वह इस्तिहाज़ा है, यानी अगर 45 दिन ख़ून आता रहा तो 25 दिन निफ़ास के और 20 दिन इस्तिहाज़ा के माने जायेंगे।

(88) तवाफ़ की दुआएं :

तवाफ़ के पहल फेरे की दुआ

सुबहानल्लाहि वलहमदुलिल्लाहि वला इलाहा इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबर व ला हौला व ला क़ुव्वता इल्लाबिल्लाहिल अ़लिय्यिल अज़ीम. वस्सलातु वस्सलामु अ़ला रसूलिल्लाहि सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम. अल्लाहुम्मा ईमानम बिक व तस्दीक़म बि कलिमातिक व वफ़ाअम बि अ़हदिक व इत्तिबाअ़न लिसुन्नति नबिय्यिक व हबीबिक मुहम्मदिन सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम. अल्लाहुम्मा इन्नी अस्अलुकल अ़फव वल आफ़ियत वल

मुआफ़ातद्दाइमता फ़िद्दीनि वद्दुनिया वल आख़िरति वल फ़ौज़ बिल जन्नति वन्नजात मिनन्नार.

तर्जुमा - अल्लाह तआला पाक है और सब तारीफ़ अल्लाह ही के लिए है और अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं।

अल्लाह तआला सब से बड़ा है। और गुनाहों से बचने की ताक़त और इबादत की तरफ़ राग़िब होने की कुव्वत अल्लाह ही की तरफ़ से मिलती है। बुज़ुर्गी और अज़्मत वाला है और अल्लाह तआला की रहमत और सलाम हो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर। ऐ अल्लाह तुझ पर ईमान लाते हुए और तेरे अहकाम को मानते हुए और तुझ से किये हुए अहद को पूरा करते हुए और तेरे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नत की पैरवी

करते हुए मैं तवाफ़ शुरू करता हूँ।

ऐ अल्लाह! मैं तुझसे सवाल करता हूँ गुनाहों से माफ़ी का और हर बला से सलामती का और हर तकलीफ़ से हिफ़ाज़त का। दीन दुनिया और आख़िरत की राहत चाहता हूँ और कामयाबी के साथ जन्नत में दाख़िले का सवाल करता हूँ और दोज़ख़ से नजात पाने की इल्तिजा करता हूँ।

(89) दूसरे फेरे की दुआ :

अल्लाहुम्मा इन्न हाज़ल बयत बयतुक वल हरम हरमुक वल अम्न अम्नुक वल अ़ब्द अ़ब्दुक व अना अ़ब्दुक वब्नु अ़ब्दिका व हाज़ा मक़ामुल आईज़ि बिका मिनन्नारि फ़हर्रिम लुहूमना .व बशरतना अ़लन्नारि. अल्लाहुम्मा हब्बिब इलयनल ईमान व ज़य्यिनहु फ़ी .क़ुलूबिना व कर्रिह

इलयनल कुफ्र वल फुसूक़ वल अ़िसयान वजअ़ल्ना मिनर्राशिदीन. अल्लाहुम्मा क़िनी अ़ज़बक यौम तबअ़सु इबादक अल्लाहुम्मर्ज़ुक़निल जन्नत बिग़ैरि हिसाब.

तर्जुमा - या अल्लाह! बेशक यह घर तेरा घर है और यह हरम तेरा हरम है और यहां का अम्न व अमान तेरा ही दिया हुआ है और हर बन्दा तेरा ही बन्दा है। और मैं भी तेरा ही बन्दा हूँ और तेरे ही बन्दे का बेटा हूँ। और यह दोज़ख़ की आग से तेरी पनाह पकड़ने वालों की जगह है, सो तू हमारे गोश्त और खाल को दोज़ख़ पर हराम कर दे।

ऐ अल्लाह! हमारे लिए ईमान को मज़बूत बना दे और हमारे दिलों को इस से संवार दे, और हमारे लिए कुफ़्र, बदकारी, नाफ़र्मानी को ना पसन्द बना दे और हमें हिदायत पाने वालों

में शामिल कर ले। ऐ अल्लाह! तू अपने बन्दों को जिस दिन दोबारा ज़िन्दा कर के उठाये, मुझे अपने अ़ज़ाब से बचाना। ऐ अल्लाह! मुझे बग़ैर हिसाब के जन्नत अ़ता फ़रमा।

(90) तीसरे फेरे की दुआ़ :

अल्लाहुम्मा इन्नी अऊ़ज़ु बि का मिनश्शाक्कि वश्शिर्कि वश्शिकाकि वन्निफ़ाक़ि वसूअिल अख़्लाक़ि सूअिल मन्ज़रि वल मुनक़लबि फ़िल मालि वल अहलि वल वलदि अल्लाहुम्मा इन्नी असअलुक रिज़ाका वल जन्नत व अऊ़ज़ु बिका मिन सख़तिका वन्नार अल्लाहुम्मा इन्नी अऊ़ज़ु बिक मिन फ़ित्नतिल क़ब्रि व अऊ़ज़ुबिक मिन फ़ित्नतिल महया वल ममात.

तर्जुमा : ऐ अल्लाह ! मैं तेरी पनाह

चाहता हूँ। तेरे अहकाम में शक करने से और तेरी तौहीद व सिफ़ात में शिर्क से और इख़्तिलाफ़ व निफ़ाक़ से और बुरें अख़लाक़ से बुरे हाल और बुरे अंजाम से, माल और अहल व अ़याल में। ऐ अल्लाह! मैं तुझसे तेरी रज़ा मन्दी की भीक मांगता हूँ और जन्नत की, और तेरी पनाह में आता हूँ। तेरे ग़ज़ब से और दोज़ख़ से। ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह में आता हूँ ज़िन्दगी और मौत की हर मुसीबत से।

(91) चौथे फेरे की दुआ़ :

अल्लाहुम्मज अ़लहु हज्जम मब्रूरंव व सअ़यम मश्कूरंव व ज़ंबम मग़फ़ूरंव व अ़मलन सालिहम मक़्बूलंव व तिजारतल लन तबूर या आ़लिम मा फ़िस्सुदूरि अख़्रिजनी या अल्लाहु मिनज़्ज़ुलुमाति इलन्नूर. अल्लाहुम्मा इन्नी असअलुक

मूजिबाति रहमतिक व अ़ज़ाइम मग़्फ़िरतिका वस्सलामता मिनकुल्लि इस्मिन वल ग़नीमता मिन कुल्लि बिर्रिंव व फ़ौज़ बिल जन्नति वन्नजाता मिनन्नार. रब्बि क़न्निअ्नी बिमा रज़क़्तनी वबारिक ली फ़ीमा अअ्तयतनी वख़्लुफ़ अ़ला कुल्लि ग़ाइबतिल ली मिन्का बिख़यरिन.

तर्जुमा - ऐ अल्लाह! बना दे मेरे इस हज को हज्जे मक़्बूल और कामयाब कोशिश और गुनाहों की मग़्फ़िरत का ज़रिया और मक़्बूल नेक अ़मल और बे नुक़सान तिजारत अ़ता फ़रमा। ऐ दिलों के हाल जानने वाले ऐ अल्लाह! मुझे गुनाह की अन्धयारियों से निकाल कर और ईमान व नेक अ़मल की रौशनी की तरफ़ रहनुमाई फ़रमा। ऐ अल्लाह ! मैं तुझसे सवाल करता हूँ तेरी रहमत के हासिल होने के लाज़मी

ज़रियों का और उन अस्बाब का जो तेरी मग़फ़िरत को मेरे लिए लाज़मी बना दे, और हर गुनाह से बचने का और हर नेकी से फ़ायदा उठाने का जन्नत में दाख़िले का और दोज़ख़ से नजात पाने का और ऐ मेरे रब तूने जो कुछ मुझे रिज़्क़ दिया है उस पर इत्मीनान भी अ़ता फ़रमा और जो नेअ़मतें मुझे अ़ता फ़रमायी हैं इन में बरकत दे और मेरी हर ग़ायब चीज़ पर तू मेरी हिफ़ाज़त करने वाला बन जा।

(92) पाँचवें फेरे की दुआ़ :

अल्लाहुम्मा अज़िल्लनी या अल्लाहु तहता ज़िल्लि अर्शिका यौमा ला ज़िल्ला इल्ला ज़िल्ला अर्शिका वला बाक़िया इल्ला वजहका वस्क़िनी मिन हौज़ि नबिय्यिका सय्यिदिना मुहम्मदिन सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम शरबतन हनीअतम मरीअतल ला

नज़्मअु बअ़दहा अबदन अल्लाहुम्मा इन्नी असअलुका मिन ख़ैरि मा सअलका मिनहु नबिय्युका सय्यिदुना मुहम्मदुन सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम व अ़ऊज़ुबिका मिन शर्रि मस्तआ़ज़का मिनहु नबिय्युक मुहम्मदुन सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम. अल्लाहुम्मा इन्नी असअलुकल जन्नत व नअ़ीमहा वमा युक़र्रिबुनी इलयहा मिन कौ़लिन अव फ़िअ़लिन अव अ़मलिन व अऊ़ज़ुबिका मिनन्नारि व मा युक़र्रिबुनी इलयहा मिन क़ौलिन अव फ़िअ़लिन अव अ़मलिन.

तर्जुमा - ऐ अल्लाह! जिस रोज़ सिवाय तेरे अर्श के साये के कहीं साया न होगा और तेरे सिवा कोई बाक़ी न रहेगा, मुझे अपने अर्श के साये के नीचे जगह देना और अपने नबी सय्यदना मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के हौज़े

कौसर से ऐसा खुशगवार और खुश ज़ायक़ा घूंट पिलाना कि इसके बाद कभी मुझे प्यास न लगे।

ऐ अल्लाह! मैं तुझसे उन चीज़ों की भलाई चाहता हूँ, जिन को तेरे नबी सय्यदना मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने तुझसे तलब किया और उन चीज़ों की बुराई से तेरी पनाह चाहता हूँ, जिन से तेरे नबी सय्यदना मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने पनाह मांगी। ऐ अल्लाह! मैं तुझसे जन्नत और उसकी नेअ़मतों का सवाल करता हूँ और हर उस क़ौल, फ़ेल या अ़मल की तौफ़ीक़ का जो मुझे जन्नत से क़रीब कर दे।

और हर उस क़ौल, फेल या अ़मल से जो मुझे दोज़ख़ में ले जावे, मैं तेरी पनाह चाहता हूँ।

(93) छटे फेरे की दुआ :

अल्लाहुम्मा इन्न लक अ़लय्य हुक़ूक़न कसीरतन फ़ीमा बयनी व बयनक व हुक़ूक़न कसीरतन फ़ीमा बयनी व बयन ख़ल्क़िका अल्लाहुम्मा मा कान लका मिनहा फ़ग़्फ़िरली व मा कान लि ख़ल्क़िका फ़त हम्मलहु अ़न्नी व अ़ग़्ननी बि हलालि का अन हरामिका व बिताअ़तिका अ़म मअ़सियतिका व बिफ़ज़लिका अ़म्मन सिवाका या वासिअ़ल मग़्फ़िरति. अल्लाहुम्मा इन्ना बैतका अज़ीमुंव व वजहका करीमुंव व अन्त या अल्लाहु हलीमुन करीमुन अज़ीमुन तुहिब्बुल अ़फ़्वा फ़अ़्फ़ु अ़न्नी.

तर्जुमा - ऐ अल्लाह! मुझ पर तेरे बहुत से हुक़ूक़ हैं। उन मामलात में जो मेरे और तेरे

दरमियान हैं, और बहुत से हुक़ूक़ हैं उन मामलात में जो मेरे और तेरी मख़लूक़ के दरमियान हैं। ऐ अल्लाह ! इन में से जिन का ताल्लुक़ सिर्फ़ तुझ से हो उन की कोताही की मुझे माफ़ी दे और जिनका ताल्लुक़ तेरी मख़लूक़ से हो उनका तू ज़िम्मेदार बन जा। ऐ अल्लाह ! मुझे रिज़्क़े हलाल अ़ता फ़रमा कर हराम से बचा ले और फ़रमांबरदारी की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा कर नाफ़रमानी से बचा ले और अपने फ़ज़्ल से सरफ़राज़ फ़रमा।

अपने सिवा दूसरों से मुझे बेपरवाह कर दे ऐ वसीअ़ मग़्फ़िरत वाले !

ऐ अल्लाह ! बेशक, तेरा घर बड़ा अ़ज़मत वाला है और तेरी ज़ात बड़ी इ़ज़्ज़त वाली है, और ऐ अल्लाह, तू बड़ा बा विक़ार है, बड़ा करम वाला है और बड़ी इ़ज़्ज़त वाला है। माफ़ी

को पसन्द करता है। सो मेरी ख़ताओं को भी माफ़ फ़रमा दे।

(94) सातवें फेरे की दुआ :

अल्लाहुम्मा इन्नी असअलुका ईमानन कामिलंव व यक़ीनन सादीक़ंव व रिज़क़ंव वासिअंव व क़ल्बन ख़ाशिअंव व लिसानन ज़ाकिरंव व रिज़क़न हलालन तय्यिबंव व तौबतन नसूहंव व तौबतन क़ब्लल मौति व राहतन इन्दल मौति व मग़्फ़िरतंव व रहमतम बअ्दल मौति वल अफ़्व इन्दल हिसाबि वल् फ़ौज़ बिल जन्नाति वन्नजात मिनन्नारि बिरहमतिक या अज़ीज़ु या ग़फ़्फ़ारु रब्बि ज़िद्नी इल्मंव व अलहिक़नी बिस्सालिहीन.

तर्जुमा - ऐ अल्लाह ! मैं तुझसे मांगता हूँ कामिल ईमान और सच्चा यक़ीन और फ़राग़त

वाला रिज़्क़ और आजिज़ी करने वाला दिल, और तेरा ज़िक्र करने वाली ज़बान और हलाल और पाक रोज़ी और सच्चे दिल की तौबा और मौत से पहले की तौबा और मौत के वक़्त की राहत और मरने के बाद मग्फ़िरत और रहमत और हिसाब के वक़्त माफ़ी और जन्नत का दाख़िला और दोज़ख़ से नजात। ये सब कुछ मांगता हूँ तेरी रहमत के वसीले से। ऐ बड़ी इज़्ज़त वाले ऐ मग्फ़िरत वाले, ऐ परवरदिगार! मेरे इल्म में इज़ाफ़ा कर और मुझे नेक लोगों में शामिल कर दे।

इस तरह हज्रे अस्वद पर पहुँचने पर अब आप के सात फेरे या चक्कर पूरे हुए यानी एक तवाफ़ पूरा हुआ।

यह हुआ तवाफ़े उमरा।

(95)मुक़ामे मुल्तज़म पर पढ़ने की दुआ :

अल्लाहुम्मा या रब्बल बैतिल अतीक़ि अअ़तिक रिक़ाबना व रिक़ाब आबाइना व उम्महातिना व इख़्वानिना व अज़वाजिना व औलादिना मिनन्नारि या ज़ल्जूदि वल करमि वल फ़ज़लि वल मन्नि वल अ़ताइ वल इहसानि अल्लाहुम्मा अहसिन आक़िबतना फ़िल उमूरि कुल्लिहा व अजिर्ना मिन ख़िज़यिद्दुनिया व अ़ज़ाबिल आख़िरति.

अल्लाहुम्मा इन्नी अ़ब्दुका वाक़िफ़ून तहत बाबिका मुल्तज़िमुन बि अ़ताबिका मुतज़ल्लिलुन बयन यदैक अर्जू रहमतका व अख़्शा अ़ज़ाबका या क़दीमल इहसानि अल्लाहुम्मा इन्नी असअलुका अ़न तरफ़आ ज़िकरी व तज़आ विज़्री व तुस्लिहा अम्री व तुतह्हिरा क़ल्बी व तुनव्विरली फ़ी क़ब्री

व तग़्फ़िरली ज़न्बी व असअलुकद दरजातिल उ़ला मिनल जन्नति. (आमीन)

तर्जुमा - ऐ अल्लाह! ऐ क़दीम घर के मालिक! हमारी गर्दनों को हमारे बाप दादाओं, माँ, बहन, भाईयों, जोड़ों और औलाद की गर्दनो को जहन्नम से आज़ाद कर दे। ऐ बख़्शिश वाले, करम वाले, फ़ज़्ल वाले एहसान वाले, अ़ता वाले। ऐ अल्लाह तमाम मामलात में हमारा अंजाम बख़ैर फ़रमा और हमें दुनिया की रूसवाई और आख़िरत के अ़ज़ाब से महफ़ूज़ रख। ऐ अल्लाह! मैं तेरा बन्दा हूँ, और तेरे मुक़द्दस घर के दरवाज़े के नीचे खड़ा हूँ और तेरे दरवाज़े की चौखट से लिपटा हुआ हूँ। तेरे सामने आ़जिज़ी का इज़हार कर रहा हूँ और तेरी रहमत का तलब गार हूँ। तेरे अ़ज़ाब से डर रहा हूँ। ऐ हमेशा के मोहसिन ! अब भी एहसान फ़रमा।

ऐअल्लाह ! मैं तुझसे सवाल करता हूँ मेरे ज़िक्र को बुलन्दी अ़ता फ़रमा और मेरे दिल को पाक कर और मेरे लिए क़ब्र में रौशनी फ़रमा और मेरे गुनाह माफ़ फ़रमा और मैं तुझसे जन्नत के उँचे दर्जों की भीक मांगता हूँ। (आमीन)

(96) मुक़ामे इब्राहीम (अ़ले.) की दुआ़ :

अल्लाहुम्मा इन्नका तअ़लमु सिर्री व अ़लानियती फ़क़बल मअ़ज़िरती व तअ़लमु हाजती फ़ अअ़तिनी सुआली व तअ़लमु मा नफ़्सी फग़्फ़िरली ज़ुनूबी अल्लाहुम्मा इन्नी असअलुका ईमानंय युबाश्रिरू क़ल्बी व यक़ीनन सादिक़न हत्ता अअ़लम अन्नहु ला युसीबुनी इल्ला मा कतब्त ली व रिज़म मिनक बिमा क़समत ली अन्त वलिय्यी फ़िद्दुनिया वल

आख़िरति तवफ़्फ़नी मुस्लिमंव व अलहिक़नी बिस्सालिहीन अल्लाहुम्मा ला तदअ़लना फ़ी मक़ामिना हाज़ा ज़म्बन इल्ला ग़फ़रत्तहु व ला हम्मन इल्ला फ़र्रजतहु व ला हाजतन इल्ला क़ज़यतहा व यस्सरतहा फ़यस्सिर उमूरना वश्रह सुदूरना व नव्विर क़ुलूबना वख़्तिम बिस्सालिहाति अअ़मालना अल्लाहुम्मा तवफ़्फ़ना मुस्लिमीन व अलहिक़ना बिस्सालिहीन ग़ैर ख़ज़ाया व ला मफ़्तूनीन आमीन या रब्बल आ़लमीन.

तर्जुमा - ऐ अल्लाह ! तू मेरी सब छुपी और खुली बातें जानता है, लिहाज़ा मेरी मअ़ज़रत को क़बूल फ़रमा और तू मेरी हाजत को जानता है, लिहाज़ा तू मेरी ज़रूरतों को पूरी कर और तू मेरे दिल के हाल को जानता है, लिहाज़ा मेरे गुनाहों को माफ़ फ़रमा।

ऐ अल्लाह ! मैं तुझसे मांगता हूँ ऐसा ईमान जो मेरे दिल में समा जाये और ऐसा सच्चा यक़ीन कि मैं जान लूं कि जो कुछ तूने मेरी तक़दीर में लिख दिया है वही मुझको पहुंचेगा और तेरी तरफ़ से अपनी क़िस्मत पर रज़ा मन्दी। तू ही मेरा मददगार है दुनिया और आख़िरत में मुझे इस्लाम की हालत में वफ़ात दे, और नेक लोगों के ज़ुमरे में मुझे शामिल फ़रमा।

ऐ अल्लाह ! इस मुक़द्दस मुक़ाम की हाज़री के मौक़े पर कोई हमारा गुनाह बग़ैर माफ़ किये न छोड़ना और कोई परेशानी दूर किये बग़ैर न छोड़ना और कोई ज़रूरत पूरी किये बग़ैर और सहल किये बग़ैर न छोड़ना। तू हमारे तमाम काम आसान कर दे और हमारे सीनों को खोल दे और हमारे दिलों को रौशन

कर दे और हमारे आमाल को नेकियों के साथ ख़त्म फ़रमा। ऐ अल्लाह ! हमें इस्लाम की हालत में मौत दे और हमें नेक लोगों में शामिल फ़रमा कि न हम रुसवा हों न हम आज़माइश में पड़ें आमीन ऐ रब्बुल आ़लमीन.

(97) सफ़ा व मर्वा की दुआ़ :

इन्नस्सफ़ा वल् मर्वता मिन शआ़इरिल्लाह.

तर्जुमा - बिला शुबह, सफ़ा और मर्वा अल्लाह की निशानीयों में से हैं।

ला इलाहा इल्लल्लाहु वह्दहु ला शरीकलहु लहुल मुल्कु वलहुल् हम्दु वहुव अ़ला कुल्लि शैइन क़दीर, ला इलाहा इल्लल्लाहु वह्दहु अन्जज़ा वअ़दहु व नसरा अ़ब्दहु व हज़मल अहज़ाब वह्दहु.

तर्जुमा - अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, जो यकता है, उसका कोई शरीक नहीं।

बादशाही उसी का हक़ है। तारीफ़ और शुक्र का वही मुस्तहिक़ है और यह हर चीज़ पर पूरी तरह क़ादिर है। अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, वह एक अकेला है। उसने अपना वादा पूरा कर दिखाया और अपने बन्दे की मदद की। और उसने अकेले ही तमाम लश्करों को शिकस्त दी।''

फिर दरूद शरीफ़ पढ़कर जो दुआ मांगनी हो मांगी जाए। अपने लिए, अपनी आल औलाद, अज़ीज़ रिश्तेदारों के लिए। यह कुबूलियते दुआ का मुक़ाम है। इसलिए दुनिया और आख़िरत की भलाई और कामियाबी के लिए ख़ूब दुआ की जाए और फिर यह दुआ पढ़ी जाए--

अल्लाहुम्म इन्नका क़ुलता उदअूनी अस्तजिब लकुम व इन्नका ला तुख़्लिफ़ुल

मीआ़द इन्नी असअलुक कमा हदयतनी लिल इस्लामि अल्ला तंज़िअ़हु मिन्नी हत्ता तवफ़्फ़नी व अना मुस्लिम :

तर्जुमा - ऐ अल्लाह! तेरा इर्शाद है कि मुझ से मांगो, मैं क़ुबूल करूंगा और तू कभी वादा ख़िलाफ़ी नहीं करता। मेरा तुझ से यह सवाल है कि जिस तरह तू ने मुझे इस्लाम लाने की तौफ़ीक़ दी है। तू इस दौलत को कभी मुझ से दूर न करना। यहाँ तक कि तू मुझे मौत नसीब फ़रमाये तो मेरा ख़ात्मा इस्लाम पर हो।

रब्बिग़्फ़िर वरहम इन्नका अन्तल अअ़ज़्ज़ुल अकरम.

मेरे रब ! मेरी मग़्फ़िरत फ़रमा दे। मेरे हाल पर रहम फ़रमा दे। तू इन्तिहाई ग़ालिब और इन्तिहाई बुज़ुर्ग है।

(98) रूकने यमानी :

जब आप तवाफ़ करेंगे तो हजे अस्वद के पहले काबा शरीफ़ का वह कोना आवेगा, जिसे रूक्ने यमानी कहते हैं। यहां भी आप "बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अक्बर" कहकर तवाफ़ जारी रखें और यहां से हजे अस्वद तक यह दुआ पढ़ें-

रब्बना आतिना फ़िद्दुनिया
हसनतंव व फ़िल आख़िरति हसनतंव
वक़िना अज़ाबन्नार.

तर्जुमा - ऐ हमारे रब ! हम को दुनिया और आख़िरत में भलाइयां और ख़ैर ख़ूबी अ़ता फ़रमा और हम सब को आग के अ़ज़ाब से बचा ले।

यह याद रखें कि बैतुल्लाह का तवाफ़

करते वक़्त आप हर फेरे में रूकने यमानी से हज्रे अस्वद तक यह दुआ पढ़ सकते हैं।

(99) "हज का साथी" नामी किताब लिखने का मक़सद :

"हज का साथी" नामी किताब में हमने जो तरीक़ा बयान किया है, वह आम लोगों के लिए है जो हज की मसरूफ़ियात देखकर वहाँ जाकर घबरा जाते हैं कि क्या करें और क्या न करें!

वहाँ पर हमारी बहनें भी हैज़ के दिन आने से या इस्तिहाज़ा हो या निफ़ास हो, मायूस होकर रात दिन सोई पड़ी रहती हैं, और यह समझती हैं कि इनका सफ़र ख़राब हुआ, और हज का सवाब जाता रहा।

ऐसे मौक़े पर हमारी यह छोटी सी "हज गाईड" इन्शा अल्लाह उनकी हिम्मत बढ़ायेगी

कि उनकी कोई मेहनत अकारत नहीं गयी।

(99-A) जनाज़े की नमाज़ :

आप हज के दिनों में मक्का में हों या मदीना में हों तक़रीबन हर नमाज़ के वक़्त बहुत से जनाज़े आते हैं और जनाज़े की नमाज़ वहीं अदा की जाती है, और सब से ज़्यादा वास्ता मक्का शरीफ़ में ठहरने के दौरान पड़ता है।

आप हरम शरीफ़ में जहाँ कहीं बैठे हों नमाज़ के पाँच दस मिनट पहले जनाज़े आते हुए आप को दिखाई देंगे, यह सब जनाज़े एक जगह जमा कर दिए जाते हैं, फ़र्ज़ नमाज़ हो जाने के फ़ौरन बाद आप को "अस्सलातुल मैय्यत" की आवाज़ सुनाई देगी, यह आवाज़ सुनते ही लोग जनाज़े की नमाज़ पढ़ने के लिए खड़े हो जाते हैं। आप भी खड़े हो जाएं, जनाज़े की नमाज़ पढ़ने का तरीक़ा हम आप को यहाँ

बताए देते हैं।

हरम शरीफ़ में जैसे ही "अस्सलातुल मैय्यत" का एलान हो आप फ़ौरन खड़े हो जाएं।

पहली तकबीर :

इमाम साहब "अल्लाहु अकबर" कहते हुए जनाज़ा की नमाज़ शुरू करेंगे, आप भी "अल्लाहु अकबर" कह कर दोनों हाथ कानों तक उठायें और बांध लें फिर दुआए सना पढ़िए दुआए सना उसे कहते हैं जो आप हर नमाज़ शुरू करने के फ़ौरन बाद पढ़ते हैं जो आप को याद भी है, फिर भी आप की सहूलत के लिए हम दुआए सना लिख रहे हैं

"सुबहानक अल्लाहुम्मा व बिहमदिका व तबारकसमुका व तआ़ला जद्दुका व जल्ल सनाउक व लाइलाहा ग़ैरुक।"

दूसरी तकबीर :

सना पढ़ लेने के बाद इमाम दूसरी तकबीर कहेगा आप भी तकबीर कहें और उस के बाद दरूद शरीफ़ पढ़ें जो हर नमाज़ की आख़री रकअ़त में अत्तहीयात के बाद आप पढ़ते हैं। आप की सहूलत के लिए हम दरूद शरीफ़ लिख देते हैं।

"अल्लाहुम्मा सल्लि अ़ला मुहम्मदिंव व अ़ला आलि मुहम्मदिन कमा सल्लैता अ़ला इब्राहीमा व अ़ला आलि इब्राहीमा इन्नका हमीदुम्मजीद।

अल्ला हुम्मा बारिक अ़ला मुहम्मदिंव व अ़ला आलि मुहम्मदिन कमा बारकता अ़ला इब्राहीमा व अ़ला आलि इब्राहीमा इन्नका हमीदुम्मजीद"।

तीसरी तकबीर :

दरूदे इब्राहीम पूरा पढ़ लेने के बाद इमाम साहब तीसरी तकबीर कहेंगे, आप भी उन के साथ तकबीर कहें और उस के बाद यह दुआ पढ़ें।

"अल्ला हुम्मग़्फ़िर लि हय्यिना व मय्यितिना व शाहिदिना व ग़ाइबिना व सग़ीरिना व कबीरिना व ज़करिना व उनसाना अल्लाहुम्मा मन अहययृतहू मिन्ना फ़अहयिही अलल इस्लामि वमन तवफ़्फ़ैतहू मिन्ना फ़तवफ़्फ़हू अलल ईमान"

चौथी तकबीर :

यह दुआ पढ़ लेने के बाद इमाम साहब चौथी तकबीर कहेंगे और फिर दाऐं, बाऐं सलाम फेर देंगे आप भी इमाम साहब के साथ चौथी तकबीर कहें और दाऐं, बाऐं सलाम फेर दें, बस अब अलहम्दुलिल्लाह आप ने नमाज़े जनाज़ा

अदा कर ली।

(100) आख़री इल्तिजा :

मेरे जो भाई इस गाईड से फ़ायदा उठायें और उन्हें इस से राहत और आसानी का हज मयस्सर हो, मेरी उन से आजिज़ाना दरख़्वास्त है कि किसी एक तवाफ़ के मौक़े पर अपने इस गुनाहगार भाई अब्दुल करीम पारेख के लिए मग़्फ़िरत की दुआ कर दें।

और ज़ियारते मदीना तय्यबा के मौक़े पर हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम के रौज़-ए-मुबारक पर मेरी तरफ़ से हदीया-ए-सलाम पेश फ़रमा दें।

खादिम व तालिबे दुआ

(हज़रत मौलाना) अब्दुल करीम पारेख

नागपुर-8 (महाराष्ट्र) इन्डिया

(तसहीह शुदा एडीशन हज 1998)